पोथी मिलने री ठौड़

1. सर्वोदय साहित्य संस्थान,
   कृष्णा निवास, बीकानेर
2. नवयुग ग्रंथ कुटीर, बीकानेर
3. राजस्थान पुस्तक गृह, बीकानेर

पैली बार छपी सन १९६५

मोल चार रुपीया

मुद्रक

बी. एल. सोनी M A, LL B,

शिव प्रिंटिंग प्रेस,

श्री जैन पाठशाला के सामने

बीकानेर

MANAKHO (Rajasthani Poem) Girdhari Singh Parihar : Rs. 4.0

अरपण

सुत सोह्गाग समर नै सूपै, वा वैना मावा नै ।
जुनम जग अड जूझण जोगा, जबरा जोधावा नै ॥
मुलक मानवै माथा अरपै, सैनिक सूर जका नै ।
था हाथा चव्हाण "मानखो", ज्यू ओ अरपू वानै ।

भारत रा प्रतिरक्षा मंत्री

श्री वाई. वी. चव्हाण

रे

सबळ हाथां में

घणे आदर स्यूं

—प्रस्तावना—

राजस्थानी के प्रसिद्ध जन्मसिद्ध कवि श्री गिरिधारीसिह पडिहार की प्रत्येक रचना एक उत्तमकोटि के काव्य की समस्त विशेषताओ से सम्पन्न होती है। "मानखो" मे इनकी यह काव्यशक्ति और भी अधिक प्रखर हो उठी है।

मानखो—का सरस कथा प्रवाह अटूट है और महाकवि माघ की '—

"अनुज्झितार्थ सम्बन्ध प्रबन्धो दुरुदाहर."

(जिसमे भावो का सम्बन्ध किसी भी स्थान पर टूटता दिखाई न दे ऐसे प्रबन्धो का उदाहरण कठिनता मे ही कही पर मिलना है।) इस उक्ति की आवश्यकता को पूर्ण कर देना है।

यह काव्य राजस्थानी भाषा को केवल भाषादृष्टि से ही समृद्ध नही करेगा अपितु अपने भावगाभीर्य और प्रत्येक सहृदय के हृदय को हरने वाली वर्णनशैली के कारण अतीत और वर्तमानयुग के प्रत्येक रसिक को राजस्थानी का भक्त बना देगा।

सक्षेप मे इसकी प्रत्येक उक्ति मे प्रेरणा, प्रतिज्ञा और प्रभाव का प्रादुर्भाव है और यह वीर-प्रसू राजस्थान की वीरधरा के अनुरूप एक अनुपम काव्य है। इसके प्रत्येक पद मे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसका रचयिता केवल क्षात्र धर्म के अन्तर्निहित रहस्य का ही ज्ञाता नही अपितु उसका प्रेरयिता भी है।—

सत पत न्याव धरम धरती रै, कारण जका न जूझै।
वे जसम्या ही मरे मरासा, टाड मरण नी सूझै॥

'मानखो' की सुभद्रा प्रत्यक्ष रूपमे एक अभिवन्दनीय वीर पत्नि, और एक वीर-प्रसू जननी है। श्री पडिहार का नारी, चित्रण परम प्राञ्जल— और भारतीय नारी के आदर्श का रक्षक है—

कुळ धरम करम मरजादा री
नारी नर री रखवाली है।
नारी निरमल है भगनी सी
कुळ री जूझलै जगनी स्यूँ।

सुभद्रा एक आदर्श भारतीय नारी है। उसका यह उद्घोष है:—

रोकेंलो अधरम किया रहै,
धरती है धरम रखाळा री।

इस नारी की ही किन्तु वैधव्य मे कैसी दयनीय दशा हो जाती है इसके [illegible] का प्रत्यक्ष दर्शन कालिदास के रतिविलाप मे कठिनता से ही किसी अश मे कम [illegible]—

धा बिछड्या साजन कुरज जियाँ
हूँ आखी ऊमर कुरलाऊं ।

चित्रसेन की रानी की उस उक्ति से एक विधवा के समस्त 'जीवन की करुण कहानी को प्रतिध्वनित कर दिया है । उनकी यह सम्वेदना परम व्यापक होती है —

वा पीड कळपतै प्राणारी ।
छळकी, जड चेतन पर ढुळगी ॥

कर्त्तव्यविमुख अपने पतिदेव अर्जुन को जब सुभद्रा ने अपने वाग्बाणो से विद्ध कर दिया तो अर्जुन कहता है —

बस घरणी बस करो
हिये रो हेमाचळ हालै है ।
घणो झुलसग्यो नर पारथ रो
अब झळ नी झालै है ॥

नारी चित्रण के अतिरिक्त प्रसङ्ग वश कवि के सम्मुख जो भी प्रकरण आया है उसको कवि ने अपने ओजस्वी काव्य मे अमर बना दिया है । काव्य का कथानक परम बाह्य और आन्तरिक–सघर्षमय सग्राम का है परन्तु कवि केवल लोमहर्षण युद्ध का ही प्रेरक नही । कृष्ण द्वारा अर्जुन को मूर्छित कर देने पर सुभद्रा मे नारी सुलभ कोमलता की भी कमी नही और काव्य के अन्त मे जब सबका सुखान्त सम्मेलन होता है तो उस समय भी कवि यह नही भूलता कि —

जदुनाथ सुभद्रा पारथ तो, नें' नोरास्यू मन ज्यावैला ।
पण जिका रेत मे रल्या मिनख, अै किया मनाया जावैला ।

युद्ध की इस विभीषिका से यह धरा कब मुक्त होगी—

नर रै हाथ नरबळी इया, नारायण कद तक होवैली ।
कदताईं धरती सिसक–सिसक, धन इया अमोलख खोवेली ॥

कवि युद्ध का समर्थन केवल उस समय ही करता है जब—

रण जद जद लोक धरम कारण तो परमपुन्न परमारथ है ॥

परन्तु युद्ध हो चाहे परमशान्ति "मानखो" का अन्तिम लक्ष्य यही है कि – मनुष्य अपने मनुष्यत्व की रक्षा करे—

छोटी बात किया थे समझो जकी "मानखो" मेटै ।

भगवती से यही प्रार्थना है कि प्रत्येक मनुष्य "मानखो" से अपने इस मनुष्यत्व की प्राप्ति करे ।

विद्याधर शास्त्री एम० ए०
डाइरेक्टर
हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर

बीकानेर
दिनाक १०-११-६३

॥ श्री ॥

भूमिका

'इलियड' मे होमर ने लिखा है— 'युद्ध मनुष्य का व्यवसाय है।' यदि हम मानव-इतिहास पर दृष्टि पात करे तो यूनान के अन्ध महाकवि के इस कथन की सत्यता मे किसी प्रकार का सन्देह नही रहेगा। मनुष्य के विकास की कथा— आदि से अब तक उसके संघर्ष की ही कहानी है। वस्तुतः युद्ध क्यो होता है इस प्रश्न पर चाहे सब एक मत न हो, पर ज्यो ज्यो मानव सभ्यता विकसित हुई त्यो त्यो युद्धो की भयंकरता अनिवार्य रूप से बढती गयी, इस निष्कर्ष पर किसी का मतभेद नही हो सकता।

विश्व की वर्तमान तनावपूर्ण स्थिति ने केवल राजनीतिज्ञो और वैज्ञानिको को ही चिन्तित नही बनाया है वल्कि साहित्कारो को भी मानव समाज के प्रति अपने दायित्व और कर्त्तव्य के प्रति सावधान किया है। गत ५० वर्षो मे होने वाले दो महायुद्धो मे धन और जन की जो क्षति हुई वह किसी भी अतीत के युद्ध से अतुलनीय है। द्वितीय महायुद्ध के बाद समस्त मानवता भावी विनाश की आशंका से सत्रस्त हो उठी है। अणु-बम के निर्माण मे योग देने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन से जब तीसरे महायुद्ध मे प्रयुक्त किये जाने वाले शस्त्रो के सम्बन्ध मे जिज्ञासा की गयी तो उन्होने उत्तर दिया कि तीसरे महायुद्ध के बारे मे तो मै कुछ नही कह सकता पर चौथा महायुद्ध पत्थरो और लाठियो से लडा जायेगा। दूरदर्शी वैज्ञानिको ने आगामी महायुद्ध के जिस संभावित खतरे की ओर संकेत किया है उसकी गंभीरता को आज विश्व के अनेक प्रमुख व्यक्ति समझने लगे है। विभिन्न राष्ट्रो के पास उत्तरोत्तर बढती हुई आणविक शस्त्रो की संख्या ने मानव-अस्तित्व को सन्देहास्पद बना दिया है। यदि युद्धो की यह परम्परा बन्द न हुई तथा भयंकर विनाशकारी आणविक शस्त्रो के प्रयोग पर प्रतिबन्ध न लगा तो निश्चय ही मानव-सभ्यता नष्ट हो जायेगी। शत-सहस्त्र वर्षो मे मनुष्य ने जो प्रगति की है वह कुछ ही क्षणो मे क्षार रूप मे परिणत हो जायेगी। आज का साहित्यकार भी इस विकट समस्या से विमुख नही है। राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि श्री गिरधारीसिंह पडिहार का खंड-काव्य 'मानखो' युद्ध की विभीषिका की ओर जन-मानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया इसी प्रकार का सफल कवि-प्रयत्न है।

काव्य-कथा — गन्धर्व चित्रसेन अपनी पत्नी के साथ विमान मे जा रहा था। उसकी पत्नी ने गाना आरम्भ किया। समक्ष सौन्दर्य की साकार प्रतिमा और उसके [illegible] कण्ठ से निसृत मधुर संगीत की तान ने चित्रसेन को तल्लीन बना दिया।

था बिछड़्या साजन कुरज जियाँ
हू आखी ऊमर कुम्लाऊ ।

चित्रसेन की राणी की इस उक्ति मे एक विधवा के समस्त जीवन की करुण कहानी को प्रतिध्वनित कर दिया है । इनकी यह सम्वेदना परम व्यापक होती है —

वा पीड कळपतँ प्राणारी ।
छळकी, जड चेतन पर ढुलगी ।।

कर्त्तव्यविमुख अपने पतिदेव अर्जुन को जब सुभद्रा ने अपने वाग्बाणो मे विद्ध कर दिया तो अर्जुन कहता है —

बस घरणी बस करो
हिये रो हेमाचळ हालँ है ।
घणो झुलसग्यो नर पारथ रो
अब झळ नी झालँ है ।।

नारी चित्रण के अतिरिक्त प्रसङ्ग वश कवि के सम्मुख जो भी प्रकरण आया है उसको कवि ने अपने ओजस्वी काव्य मे अमर बना दिया है । काव्य का कथानक परम बाह्य और आन्तरिक–सघर्षमय सग्राम का है परन्तु कवि केवल लोमहर्षण युद्ध का ही प्रेरक नही । कृष्ण द्वारा अर्जुन को मूर्छित कर देने पर सुभद्रा मे नारी सुलभ कोमलता की भी कमी नही और काव्य के अन्त मे जब सबका सुखान्त सम्मेलन होता है तो उस समय भी कवि यह नही भूलता कि —

जदुनाथ सुभद्रा पारथ तो, ने' नोरास्यू मन ज्यावँला ।
पण जिका रेत मे रल्या मिनख, अँ किया मनाया जावँला ।

युद्ध की इस विभीषिका से यह धरा कब मुक्त होगी—

नर रै हाथ नरबळी इया, नारायण कद तक होवँली ।
कदताईं धरती सिसक–सिसक, धन इया अमोलख खोवेली ।।

कवि युद्ध का समर्थन केवल उस समय ही करता है जब—

रण जद जद लोक धरम कारण तो परमपुन्न परमारथ है ।।

परन्तु युद्ध हो चाहे परमशान्ति "मानखो" का अन्तिम लक्ष्य यही है कि – मनुष्य अपने मनुष्यत्व की रक्षा करे—

छोटी बात किया थे समझो जकी "मानखो" मेटँ ।

भगवती से यही प्रार्थना है कि प्रत्येक मनुष्य "मानखो" से अपने इस मनुष्यत्व की प्राप्ति करे ।

विद्याधर शास्त्री एम० ए०
डाइरेक्टर
हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर

बीकानेर
दिनाक १०-११-६३

॥ श्री ॥

भूमिका

'इलियड' मे होमर ने लिखा है— 'युद्ध मनुष्य का व्यवसाय है।' यदि हम मानव-इतिहास पर दृष्टि पात करे तो यूनान के अन्ध महाकवि के इस कथन की सत्यता मे किसी प्रकार का सन्देह नही रहेगा। मनुष्य के विकास की कथा– आदि मे अब तक उसके सघष की ही कहानी है। वस्तुत युद्ध क्यो होता है इस प्रश्न पर चाहे सब एक मत न हो, पर ज्यो ज्यो मानव सभ्यता विकसित हुई त्यो त्यो युद्धो की भयकरता अनिवार्य रूप से वढती गयी, इस निष्कर्ष पर किसी का मतभेद नही हो सकता।

विश्व की वर्तमान तनावपूर्ण स्थिति ने केवल राजनीतिज्ञो और वैज्ञानिको को ही चिन्तित नही बनाया है वल्कि साहित्कारो को भी मानव समाज के प्रति अपने दायित्व और कर्त्तव्य के प्रति सावधान किया है। गत ५० वर्षों मे होने वाले दो महायुद्धो मे धन और जन की जो क्षति हुई वह किसी भी अतीत के युद्ध से अतुलनीय है। द्वितीय महायुद्ध के वाद समस्त मानवता भावी विनाश की आशका से सत्रस्त हो उठी है। अणु-वम के निर्माण मे योग देने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइस्टीन से जब तीसरे महायुद्ध मे प्रयुक्त किये जाने वाले शस्त्रो के सम्वन्ध मे जिज्ञासा की गयी तो उन्होने उत्तर दिया कि तीसरे महायुद्ध के वारे मे तो मै कुछ नही कह सकता पर चौथा महायुद्ध पत्थरो और लाठियो से लडा जायेगा। दूरदर्शी वैज्ञानिको ने आगामी महायुद्ध के जिस सभावित खतरे की ओर सकेत किया है उसकी गभीरता को आज विश्व के अनेक प्रमुख व्यक्ति समझने लगे है। विभिन्न राष्ट्रो के पास उत्तरोत्तर वढती हुई आणविक शस्त्रो की सख्या ने मानव-अस्तित्व को सन्देहास्पद वना दिया है। यदि युद्धो की यह परम्परा वन्द न हुई तथा भयकर विनाशकारी आणविक शस्त्रो के प्रयोग पर प्रतिवन्ध न लगा तो निश्चय ही मानव-सभ्यता नष्ट हो जायेगी। शत-सहस्र वर्षो मे मनुष्य ने जो प्रगति की है वह कुछ ही क्षणो मे क्षार रूप मे परिणत हो जायेगी। आज का साहित्यकार भी इस विकट समस्या से विमुख नही है। राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि श्री गिरधारीसिंह पडिहार का खड-काव्य 'मानखो' युद्ध की विभीषिका की ओर जन-मानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया इसी प्रकार का सफल कवि-प्रयत्न है।

काव्य-कथा – गन्धर्व चित्रसेन अपनी पत्नी के साथ विमान मे जा रहा था। उसकी पत्नी ने गाना आरम्भ किया। समक्ष सौन्दर्य की साकार प्रतिमा और उसके कल कण्ठ से निसृत मधुर सगीत की तान ने चित्रसेन को तल्लीन वना दिया।

अनायास उसने पान की पीक थूकी और वह नीचे गालव ऋषि पर गिरी। गन्धर्व चित्रसेन से चाहे अनजान में ही यह अपराध हुआ हो पर श्रीकृष्ण ने उसे दण्डित करने का निश्चय किया। चित्रसेन अपने प्राणों के भय से सब जगह शरण के लिए भागा फिरा पर किसी ने उसे शरण न दी। कोई भी श्रीकृष्ण के विरुद्ध खड़ा होने को तत्पर न हुआ। हार कर गन्धर्व चित्रसेन ने गंगा किनारे अग्नि-चिता में जलकर प्राण देने का निश्चय किया। पति को जलने को तत्पर देख उसकी पत्नी ने गहरा दुख और वेदना प्रकट करते हुए विधवा-जीवन की कदर्थना पर आंसू बहाये। कृष्ण की बहिन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा ने उसके विलाप को सुना और चित्रसेन से सारी कथा सुन उसे अभय वचन दिया। यह ज्ञान होने पर भी कि श्रीकृष्ण ही चित्रसेन को प्राण-दण्ड देने पर उतारू हैं, सुभद्रा जरा भी न हिचकिचायी। उसने जाकर अर्जुन को सारी घटना बताते हुए चित्रसेन के प्राणों की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया। आरम्भ में अर्जुन श्रीकृष्ण के विरुद्ध युद्ध के लिए सहमत न हुआ पर सुभद्रा द्वारा उत्साहित किये जाने पर वह युद्ध के लिए तैयार हो गया। दोनो ओर की सेनाए व योद्धा एक दूसरे के सामने आ डटे। सुभद्रा भी अर्जुन के रथ पर साथ थी। युद्ध आरम्भ हुआ। वीर परस्पर भिड गये। रण-क्षेत्र रक्त-रंजित हो उठा। विभिन्न प्रकार के शस्त्रों के चलने से आस-पास का वातावरण बदलने लगा। कभी अंगारे बरसते और कभी जल। अन्त में श्रीकृष्ण के तीर से अर्जुन संज्ञारहित हो रथ पर गिर पडा। थोडी देर बाद होश में आने पर उसने पाशुपत शस्त्र उठाया। वह उसका प्रयोग करने ही वाला था कि समस्त सृष्टि में त्राहि-त्राहि मच गयी। नारद और गालव दोनो ऋषि दौडते हुए आये और दोनो पक्षो के बीच मे स्थित हो श्रीकृष्ण व अर्जुन से मानवता की रक्षा के लिए युद्ध बन्द करने का अनुरोध किया। गालव ऋषि ने बताया कि उन्होंने चित्रसेन को क्षमा कर दिया है। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपने सत्य पर रहते युद्ध बन्द कर दिया। श्रीकृष्ण ने दोनो वंशो की लाज रखने और उनमे 'मानवता' जगाने का श्रेय सुभद्रा को दिया। नारद ने युद्ध मे मृत लोगो के संहार पर श्रीकृष्ण को फटकारा और कडे शब्दो मे युद्ध का विरोध किया। श्रीकृष्ण ने युद्ध की अनिवार्यता और आवश्यकता के सम्बन्ध मे अपने तर्क प्रस्तुत किये। अन्त मे तमोगुणी शक्ति का विरोध करते हुए तथा संसार के विनाशक हथियारो का समूल नाश आवश्यक बताते हुए काव्य का समाहार किया गया है।

इस कथानक को लेकर हिन्दी मे श्री माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' ने "श्री कृष्णार्जुन युद्ध" नामक नाटक बहुत पहले लिखा था जो काफी लोकप्रिय हुआ। श्रीकृष्ण और अर्जुन महाभारत के मुख्य पात्रो मे है पर महाभारत मे ऐसे किसी युद्ध का उल्लेख नही। महाभारत मे गन्धर्व चित्रसेन और गालव ऋषि का नाम कई जगह आया है पर कही भी प्रस्तुत घटना का उल्लेख नही। महाभारत

मे चित्रसेन और गालव के सम्बन्ध मे जो वर्णन मिलता है उसके आधार पर 'महाभारत की नामानुक्रमणिका' मे उनके बारे मे निम्न वृतान्त दिया गया है —

पृष्ठ ११५—

(३) चित्रसेन— एक गन्धर्व, जो सत्ताइस सहायक गन्धर्वो और अप्सराओं के साथ युधिष्ठिर की सभा मे उपस्थित हो उनका मनोरजन करते थे (सभा० ४/३७)। ये कुबेर की सभा मे भी उपस्थित होते है (सभा० १०/२६)। ये इन्द्र की सभा मे विराजते है (सभा० ७/२२)। इनका अर्जुन को संगीत–विद्या की शिक्षा देना (वन० ४४/८–९)। इन्द्र के आदेश से इनका उर्वशी के पास जाकर उसे अर्जुन को प्रसन्न करने के लिए कहना (वन०४५/६-१३)। द्वैतवन मे कौरवो के साथ इनका युद्ध और कर्ण को परास्त करना (वन०२४१ अध्याय)। दुर्योधन को बदी बनाना (वन०२४२/६)। अर्जुन द्वारा पराजित होकर इनका अपने को प्रकट कर देना (वन०२४५/४७)। इन्द्र से अर्जुन की युद्ध-कला की प्रशसा करना (विराट०६४/३८-४३) युधिष्ठर के अश्वमेध यज्ञ मे ये भी पधारे थे और यथावसर अपने नृत्य-गीत की कलाओ द्वारा ब्राह्मणो का मनोरजन करते थे (आश्व० ८८/३९-४०)। धृतराष्ट्र के आश्रम पर नारद जी के साथ ये भी पधारे थे (आश्रम०२९/०)।

पृष्ठ १०३

गालव— युधिष्ठर की सभा मे विराजने वाले एक ऋषि (सभा०४/१५)। ये इन्द्र की सभा मे भी बैठते है (सभा० ७/१०)। गुरु दक्षिणा मागने के लिए इनका गुरु विश्वामित्र से हठ करना (उद्योग० १०६/२५)। गुरु दक्षिणा के लिए आठ सौ घोडे पाने की चिन्ता (उद्योग०१०७/३-१५)। गरुड की पीठ पर बैठकर पूर्व दिशा की ओर जाते हुए गरुड के वेग से इनका व्याकुल होना (उद्योग०११२/५-१८)। गरुड के साथ धन के लिए ययाति के पास जाना (उद्योग० ११४/९)। ययाति कन्या माधवी को लेकर अयोध्यानरेश हर्यश्व के पास जाना (उद्योग० ११५/१८)। राजा हर्यश्व से दो सौ घोडे शुल्क रूप मे लेकर माधवी को एक पुत्र उत्पन्न करने के लिए उनके हाथ मे सौपना (उद्योग०११६/१५)। पुत्रोत्पति के बाद पुन माधवी को लेकर इनका दिवोदास के पास जाना (उद्योग०११६/२२)। दो सौ घोडे शुल्क रूप मे लेकर माधवी को दिवोदास के हाथ मे एक पुत्र की उत्पत्ति के लिए देना (उद्योग०११७/७)। पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् वहा से माधवी को लेकर गालव का उशीनर के पास जाना और उशीनर को माधवी के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न करने की प्रेरणा देते हुए उनसे चार सौ घोडे मागना (उद्योग० ११८/३–८)। गरुड की सलाह से विश्वामित्र को छ सौ घोडे और माधवी को देकर गुरु दक्षिणा चुकाना (उद्योग०११८/१४)। फिर एक पुत्र की उत्पत्ति के बाद माधवी को राजा ययाति को लौटाकर इनका वन को जाना (उद्योग०११८/२४)। स्वर्ग से गिरे हुए ययाति को इनका अपने तप का आठवा

भाग देना (उद्योग०१२१/२८)। नारदजी से श्रेय के विषय मे प्रश्न करना (शान्ति० २८७।५-११) । शिव महिमा के विषय मे युधिष्ठर से अपना अनुभव सुनाना (अनु० १८।५२—५८) । अगस्त्य जी के कमलो की चोरी होने पर शपथ करना (अनु० ९४।३७) । महर्षि गालव विश्वामित्र जी के ब्रह्मवादी पुत्रो मे से एक थे (अनु० ४।५२) । उनके पुत्र का नाम शृंगवान् था, जो एक महर्षि थे और जिन्होंने वृद्ध कन्या से विवाह किया था (शल्य०५२।१४—१५)

गन्धर्व चित्रसेन और महर्षि गालव के सम्बन्ध मे उपर्युक्त उद्धरण मे यह स्पष्ट हो जाता है कि कृष्णार्जुन युद्ध की कल्पना महाभारत के बाद पौराणिक-काल की है । वहा चाहे यह आख्यान किसी भी उद्देश्य मे प्रस्तुत किया गया हो पर निश्चय ही 'मानखो' के कवि ने उसे भिन्न उद्देश्य से प्रयुक्त किया है ।

नामकरण — काव्य का नाम 'मानखो' है। 'मनुष्य' मे राजस्थानी 'मिनख' बना है और इसी से 'मानखो' बना है जिसका अर्थ है मानवता। कवि ने प्रधानत. इसी अर्थ मे 'मानखो' शब्द का प्रयोग किया है.—

(१) अधिकार मानखै रो निरणै
रण रोळा कद तांईं होसी
(२) धरती रै मिनख मानखै नै
ओजू ओसाण मिल्यो कोनी

'मानखो' शब्द का प्रयोग इज्जत के अर्थ मे भी किया जाता है और कही कही कवि ने इस अर्थ मे भी प्रयोग किया है·—

"कुळ धरम करम सत तेज लाज,
हू मुड्या मानखो जावै है ।

काव्य-सौन्दर्य — 'मानखो' एक खड—काव्य है जो तीन सर्गों मे सम्पूर्ण हुआ है। इसमे केवल एक घटना—कृष्णार्जुन युद्ध—का वर्णन है । कवि ने मगलाचरण की पुरानी परिपाटी को नही अपनाया है और काव्य का आरम्भ चित्रसेन के निम्न वर्णन से किया है —

इन्द्रापुर वाळो गीतकार
सुर राग रग मे रीझ्योडो।
सुख रै हीडोळै हीड रयो,
वैभव री विरखा—भीज्योडो

'मानखो' वीर रस प्रधान कृति है। सुभद्रा और अर्जुन की उक्तियां उत्साह पूर्ण है । जिस गन्धर्व चित्रसेन को शरण देने मे सृष्टि की बडी बडी शक्तिया मुह मोड़ गयी उसी को सुभद्रा ने अभयदान देते हुए कहा —

जे आखी दुनिया मुख मोड्यो
सकट नी भाल सकी थारो ।
तो चित्रसेन अब डर कोनी
सरणो है तनै सुभद्रा रो ।।

कवि ने युद्ध का वर्णन तो बडा ही सजीव किया है । कानो तक तनी हुई प्रत्यञ्चा से निकले तीक्ष्ण तीर तीव्र ध्वनि करते हुए छूटे और उनके लगने से योद्धाओ के शरीर से रक्त के प्रवाह बहने लगे:—

काना तक तणी कवाण स्यू
तीखै तीरा रा सग्गाटा
वळ भरिया री हुकारा मे
वै' चाल्या रगता बग्गाटा

अग्नि बाणो के चलने से आग निकलने लगी और चारो ओर की धरती अगारो से ढक गयी । जब पानी बरसाने वाला शस्त्र-मेघ-बाण चला तो धारा सार वर्षा होने लगी —

ज्वाला धधकाता अगन अस्त्र
अवनी ढक ज्यावै अगारा
घन घटा ऊमडै मेघबाण
जळ भडै, पडै जाडी धारा

ऐसा प्रतीत होता था मानो वीर यमराज की डाढो पर शकर की भाति ताण्डव नृत्य कर रहे हो —

जम री जाडा पर नाच–नाच
शकर सो ताडव सूर करै

युद्ध की भूमि लाशो से भर गयी और रक्त–स्नात हो उठी । ऐसा मालूम पडता था मानो अत्यधिक क्रोध से नेत्रो की लालिमा उभर आयी हो और कसूंमल रग जैसी लाल बन गयी हो:—

लोथा पर लोथा पड पटगी
भोमी लोही मे भीज्योडी
मिळगी है रग कसूंमल मे
ज्यू आख खार स्यूं खीज्योडी

श्रीकृष्ण के तीर से अर्जुन कुछ क्षणो के लिए मूर्छित हो गया । जब होश मे आया तो उसके नेत्र क्रोध से तमतमा उठे । उसने अपना पाशुपत सम्हाला । कवि ने उसका ब्रह्माण्ड–व्यापी प्रभाव बड़े ही ओजस्वी शब्दो मे अंकित किया है:

सळ पडग्यो ब्रम्हा रै लिलाड
भू भूतनाथ री वळखाई ।
उणनुगो इन्द रो तन काप्यो
सुर नर री सगत्या थर्राई ॥

कवि ने वीर के साथ श्रृंगार रस का भी सुन्दर वर्णन किया है। सौन्दर्य के अंकन मे उसकी दृष्टि सूक्ष्म और कोमल बन गयी है। चित्रसेन की पत्नी के सौन्दर्य का चित्र स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक है—

घर मे धण रुडी रती जिमी
फूला रै काटै तुल ज्यावै ।
वो रूप पलक पलका लाग्या
नैणा प्राणा मे घुळ ज्यावै ॥

यदि ऐसा सौन्दर्य समक्ष हो और वह अपने मधुर कंठ मे प्रेम पूर्ण राग गाने लगे तो कौन ऐसा होगा जो मदमत्त न हो जाय। मानव-स्वभाव के इस सत्य को व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

नारी रो रूप कठ मीठा
नैणा रो नेव रळया सागै ।
बादळ सो उमड उलड ज्यावै,
भीतर रो नर भीजण लागे ॥

शरीर पर कलियो की कोमलता लिये, ज्योत्स्ना के समान धवल, अन्धकार मयी निराशा मे किरण मयी आशा की तरह सुभद्रा के स्वरूप का चित्रण भी आकर्षक है.—

झिळमिळी चानणी रो पळको,
ज्यू आस उजास किरण आई ।
फूला री मीठी मास जिसी,
तन पर कळिया री कवळाई ॥

यद्यपि काव्य मे वियोग दिखाया नही गया है पर उसकी सभावना से चित्रसेन की पत्नी को जो मार्मिक वेदना होती है वह हृदय-स्पर्शी है। चित्रसेन को चिता मे जलने के लिए तत्पर देख उसकी पत्नी अपने भावी वियोग की कल्पना करते हुए कहती है—

बादळ गाजै, झिरमिर छाटा,
बीजळ कड़कै दिल धडकाती ।
काजळ काळी रानडल्या मे,
हू जा लागू कुण री न्याती ॥

कही कही अन्तर्द्वन्द्व बड़ा ही स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक है। युद्ध के क्षेत्र मे सुभद्रा भी अर्जुन के साथ उसके रथ पर सवार है। युद्ध आरम्भ होने से पूर्व वह सोचती है कि दो अपनो के बीच इस रण मे वह अब किसकी मगल-कामना करे। एक ओर उसका भाई है तो दूसरी ओर उसका पति। वह असमजस मे पड जाती है कि किसकी मगल-कामना करे —

वै भाई, सोहाग अठीनै,
कुण री खैर मनाऊं।
दोना कानी खड्यो अमगळ
मगळ कुण रो गाऊं।।

आज का युग नर–नारी की समानता का है। दोनो का व्यक्तित्व मिलकर ही एक पूर्ण इकाई बनता है। यदि पुरुष को अपने पुरुषार्थ का गर्व है तो उसे यह न भूलना चाहिए कि उसका उद्गम नारी ही है —

'रळ आधो आध अग पूरो,
जद मिनख लुगाई कुण कम है।
जे नर है नर पुरुपारथ रो,
तो नारी उणरो उद्गम है।।

यो तो नारी संसार मे जननी का रूप लिये पालन का ही कार्य करती है पर आवश्यकता पडने पर वही हाथ मे शस्त्र लेकर चडी बन जाती है और मानव-धर्म व मर्यादा की रक्षा करती है —

जग री जणनी पाळन वाळी,
कोपै तो करडी काळी है।
सुभ धरम करम मरजादा री,
नारी नर री रुखवाळी है।।

नारी की महत्ता का गुणगान करते हुए कवि ने शकुन्तला और सावित्री को उदाहरण रूप मे प्रस्तुत किया है। एक ने भरत जैसे वीर को जन्म दिया और दूसरी ने भयकर मृत्यु के मुख से अपने पति को वापस निकाल लिया:—

घण कवळी जकी सकुनळ ही,
उण भूप भरत सो वणा दियो।
अँटी सगती सावित्री री,
विकराळ काळ ने जेर कियो।।

'मानखो' मे अलकारो का प्रयोग स्वाभाविक और सुन्दर रूप मे हुआ है। अलकारो ने भावो की स्पष्टता मे सहायता पहुचायी है और पाठक को बिम्ब-ग्रहण मे मदद दी है। अधिकाशत उपमा और उत्प्रेक्षा अलकार ही आये है। चित्रसेन की पत्नी के निम्न कथन मे उपमा दर्शनीय है —

वागां मे पकज पाखडल्या,
आखडल्या री गुल ज्यावैनी ।
ह हिरणी ज्यू हर कन पीव,
नी भोर गुलावी भावैनी ॥

चित्रसेन को अभय-दान देने पर उसकी पत्नी ने सुभद्रा का चरण-स्पर्श किया । इसकी कवि ने जो उत्प्रेक्षा की है वह अनूठी है —

जाणै करुणा री लैंर ढळक,
सगती रै चरणा पर ढुळगी ।

अनुप्रास यो तो जगह जगह है पर कही कही उक्ति बडी ही चमत्कार पूर्ण वन गयी है:—

का'नै री कीरत पर कोभी, काळख लाग रही है ।

'मानखो' राजस्थानी भाषा मे है । कवि का भाषा पर पूर्ण अधिकार है अत उसकी भाषा प्रसाद गुण सम्पन्न और प्रवाहमयी है । भाषा की स्वाभाविकता के लिए सुभद्रा का निम्न कथन उदाहरण रूप मे प्रस्तुत किया जा सकता है —

वीरा थे पकड अणूती नै,
इतरा तो अ वळा जावो मत ।
कर वात वावळा रै दाई,
ग्यानेसर गू ग खिडावो मत ॥

भाषा मे ध्वनि का प्रयोग भी मिलता है । कृष्ण द्वारा अपनी वीरता के सम्बन्ध मे गर्वोक्ति करने पर सुभद्रा उन पर व्यग्य करती है और जरासिन्ध के समक्ष युद्ध मे से भागने की घटना का सकेत करते हुए कहती है —

'आखो जग थानै जाणै है,
क्यू भलो नाव रणछोड पड्यो

मुहावरो के प्रयोग ने भाषा को रोचक और समृद्ध बनाया है । राजस्थानी का एक प्रसिद्ध मुहावरा है 'लड दवना' जिसका अर्थ है प्रभावित होना । कवि ने इस मुहावरे का सुन्दर प्रयोग किया है —

मोटो है भूप जवर जोधो,
धूजै है दुनिया नाव लिया ।
लू ठा रा लड दवियोडा है,
ओडी रै आडा अडै किया ॥

सन्देश:— युद्ध मानव की शाश्वत समस्या है । मानव ने बार बार शान्ति का प्रयत्न किया पर बराबर उसे युद्ध मे रत होना पडा । युद्ध अपकर्म है, दुष्कृत्य है, बुरा काम है पर एक ऐसी स्थिति भी आजाती है जब न चाहते हुए भी लडना पडता है । यदि खेत मे जबरदस्ती घुसकर फसल को नुकसान पहुचाने वाले पशु

आवाज से रोकने पर नही रुकते तो खेत की रक्षा के लिए लाठी का प्रयोग आवश्यक हो जाता है ताकि समझाने पर न मानने वाले को शक्ति के प्रयोग से समझाया जाय । शक्ति की भाषा को यह ससार जल्दी और सरलता से समझता है —

रण माडो करम जगत जाणै,
पण हद रै नाकै झालीजै ।
डागर नी घिरै दकाल्या जद,
लाठ्या ही खेत रुखाळीजै ॥

नारद को इसी बात का दुःख है कि मानव को अपने अधिकारो की रक्षा के लिए युद्ध करना पडता है जो मानव जाति के माथे पर एक बडा भारी कलक है —

अधिकार मानखै रो निरणै,
रण रोळा कद ताईं होसी ।
आ काळख ओ अज्ञान पाप,
कद मिनख लिलाडी स्यू धोसी ॥

इसके उत्तर मे कृष्ण का यह तर्क है कि जब तक बलवान अपनी शक्ति के मद मे चूर होकर दूसरो का धन, धरती आदि छीनने का प्रयत्न करता रहेगा, तब तक युद्ध बन्द न होंगे —

लूठा लूटी चावै धरती,
जुद्धा रो अन्त किया आवै ।

इसीलिए वे न्याय और धर्म के लिए युद्ध का समर्थन ही नही करते बल्कि उसे परम पुण्य और परमार्थ मानते है —

रण जद-जद लोक धर्म कारण
तो परम पुन्न परमारथ है ।
मरजाद मानखो राखण नै
नर पूरा रो पुरसारथ है ॥

सुभद्रा भी महाभारत की ओर सकेत करते हुए युद्ध की शाश्वतता स्वीकार करती है । वह अर्जुन को कृष्ण के विरुद्ध युद्ध के लिए प्रेरित व तत्पर करते हुए कहती है —

अकरम ही मेटण नै, पारथ,
था वो रगत खिडायो ।
मिनख धरम जुग-जुग जूझ्यो है,
जद जद अकरम आयो ॥

लेकिन वर्तमान काल मे भयकर सहार कारी शस्त्रो का नियंत्रण ऐसे लोगो के हाथो मे आगया है जो उसके सर्वथा अयोग्य है । कवि ने इसी को ध्यान मे रखते हुए नारद के मुख से कहलाया है —

जिण रो हिवडो ही वस कोनी,
उण रै कानू मे महाकाळ ।
जद्पत थे आप विचार करो,
ओ जोर ढळैलो किसी ढाळ ।।

पता नही, कब ऐसे लोगो का मानसिक सन्तुलन बिगड जाय और उनकी मूर्खता का विनाशकारी परिणाम समस्त मानवता को भोगना पड जाय —

कुण जाणै मिनख अगूनो वगग
कद आपो भूलै, कोप करै ।
जाणै कद जगत मिटा देवै
धक्कै स्यू धरती लोप करै ।।

यह सत्य है कि बीच मे कवि ने मानव अधिकारो की रक्षा तथा अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए युद्ध की अनिवार्यता बतायी है और दुर्बलता के जीवन को अभिशप्त माना है पर इसमे कोई सन्देह नही कि अन्त मे उसने युद्ध का स्पष्ट और दृढ शब्दो मे विरोध किया है । अगर विश्व-युद्ध हुआ तो निश्चय ही उसमे भयकर से भयकर शस्त्रो का प्रयोग होगा और उनसे समस्त मानवता के विनाश का खतरा पैदा हो जायगा । अत केवल राजनैतिक कारणो से ही नही बल्कि नैतिक कारणो से भी ऐसे किसी महायुद्ध का खुलकर और कडे शब्दो मे विरोध किया जाना चाहिए । इसी लिए अपने ग्रन्थ का समाहार करते हुए कवि ने बडे ही मार्मिक शब्दो मे कहा है —

इण तरिया जुग–जुग जग छीज्यो,
जुद्धा स्यू त्राण मिल्यो कोनी ।
धरती रै मिनख मानखै नै,
ओजू ओसाण मिल्यो कोनी ।।

'मानखो' की रचना आज के ऐतिहासिक क्षणो मे हुई है जबकि मानवता की रक्षा के लिए नये कदम उठाये जा रहे है । एक ओर कुछ दानवी शक्तिया आज भी युद्ध का समर्थन करते हुए विश्व को सम्पूर्ण विनाश की ओर धकेलने का प्रयत्न कर रही है तो दूसरी ओर मानवता को आधार बनाने वाले अनेक राष्ट्र सदा के लिए युद्धो की परम्परा मिटाने की चेष्टा कर रहे है । 'मानखो' काव्य का ऐसे विकट समय मे सभी सुधी जन स्वागत करेगे और सहृदय जन उसका रसास्वादन कर आनन्द लाभ करेंगे, ऐसी आशा है ।

चन्द्रदान चारण
एम ए., साहित्य-रत्न
प्रिंसिपल, भारतीय विद्या मन्दिर
बीकानेर

२६ जनवरी १९६४

प्रकाशकीय

श्री गिरधारीसहजी पडिहार राजस्थान और राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि हैं। इनकी कई कविताएं मैंने विभिन्न अवसरो पर सुनी। उनमे जो जोश और उत्साह है वह नवीन भारत के निर्माण मे बहुत सहायक हो सकता है। इसी भावना को ध्यान मे रख कर यह निश्चय किया गया कि कवि का "मानखो" नामक खड काव्य श्री जगजीवन सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित किया जाय। ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित होने वाले ग्रथो मे यह प्रथम है। भविष्य मे हमारे जीवन, समाज और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने वाले और भी ग्रथ प्रकाशित किये जायेंगे। आशा है सहृदयजन इस रचना का समुचित समादर कर हमारे तथा कवि के उत्साह को बढायेंगे।

पन्नालाल बारूपाल

एम. पी.

अध्यक्ष

श्री जगजीवन सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट

कोलायत, बीकानेर

दिनाक २६-१-६४

म्हारी बात

वीरा रो जस गावणो राजस्थान रे कवि रो परम्परा स्यू सभाव रयो है। वीरता रो भाव जीवतो जागतो राखण रै धरम नै इण धरती रो कवि कदे नइ भूल्यो। हू म्हारी रचनावा मे सदा उण लीक ने निभावण री चेष्टा करतो रयो हू अर इण खड-काव्य मे भी उणी धरम नै पाळणो चायो है।

जुद्ध मानखै रै माथै रो कळक है, मोटो पाप है पण धरम, धरती, न्याव अर सत री रुखाळी सारु मिनख इण पाप नै पुन्न मान'र सदा करतो आयो अर आज भी करे है। जको देश अथवा जात ओटी विरिया मे इण पुन्न ने पुरो करण री सामरथ नही राखै उण नै इण धरती पर कोई ठोड नही है, जीणै रो हक नही है।

सगती री भगती करै जको
दुनिया नी दुबळा जोगी है ॥

जके मिनखा नै आज भी धरती आदर दे रयी है अर सूरवीरा रै नाम स्यू याद करै वा आपरो वीर धरम पाळण नै, मानखो राखण नै किती झळ झाली, उण रो लेखो नही लाग सकै।

जद भीसम सो दादो विंध्यो, मारयो है करण जिस्यो भाई।
लाखा रै लोया डूब्योडो, हू मिनख मानखै अबखाई॥

धरती रा मोटा मिनख हजार उपाय करता रया पण मानखै री आ अबखाई, मिनख रै रगत मे डूबण री बेवसी, मिनख रै सामनै सदा रयी अर आज भी है।

"मानखो" म्हारी दूसरी पोथी है। रचना किसीक बणी इणरो निरणै तो विद्वान् पढारा ही करसी। हू तो इतोयी कैवणो चाऊ कै मा सारदा री किरपा स्यू म्हारी हीणी मानीजी मायड भासा (देश रै सवविधान मे जकी नै दूसरी भासावा सागै ठोड नही मिली) री अै आटी टूटी ओळया लिख्या जे कुई सेवा हुई हुवै तो म्हारो मोटो भाग है।

आदरजोग विद्वान् गुरुजन जका सदा माईत पणै रो हाथ सिर राख्यो, सर्वोदय साहित्य सस्थान रा साथी अर वै भायला जका सदा म्हारो मन बधावता रया, सगळारो घणो आभारी हू।

छेकड मे श्री जगजीवण सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट अर उण रा अध्यक्ष भाई श्री पन्नालालजी बारूपाल अेम० पी० रो मोटो आभार माथै है जका इण पोथी नै छपाण रो सगळो भार साभ लियो

सर्वोदय साहित्य संस्थान
बीकानेर
२६-१-१९६४

गिरधारीसिंह पड़िहार

: १ :

इंद्रापुर वालो गीतकार,
सुर राग रंग मे रीझ्योड़ो ।
सुख रै हींडोलै हींड र्‌यो,
वैभव री विरखा-भीज्योड़ो ॥

गीतां में गोट कलपना रा,
नैणां मे सुपना झलकै हा ।
जाणै दो अमी भर्‌या प्याला,
जीवण-जोती स्यूं पलकै हा ॥

घर मे धण रूड़ी रती जिसी,
फूलां रै कांटै तुल-ज्यावै ।
बो रूप पलक पलकां लाग्यां,
नैणां प्राणां मे घुल ज्यावै ॥

भेला सगला सुख सुरगां रा,
चरणां नै आय चूमता हा ।
ज्यूं एक फूल री मे'क उडी,
मोगरै भंवर भूंमता हा ॥

जिण रै सुरवाली लै'रां पर,
अमरां रा जीव ललक ज्यावै।
मन मोण्यां घण रूपाल़ा रा,
नैणां मे हियां छलक ज्यावै॥

वै छंद कठ रो वो मिठास,
भावां मे ग्यान भटक ज्यावै।
कितरी रभा उरवसियां री,
उण मुखड़ै आंख अटकज्यावै॥

इमरत बरसै जिण रै गीतां,
मित्तर है जिण रो देवराज।
ओड़ै दिन अमरां री बभूत,
धरती पर आई भाज आज॥

ओ चित्रसैन गंधर्व राज,
तीनूं लोकां नै वण्यों भार।
चढ़ रयो चिता पर जींवतडो,
देवां रो प्यारो कल़ाकार॥

ज्वाला री सरण फिड़कलै ज्यूं,
जीवण री जोत बुझावण नै।
गंगा तट लकड़ी भैल़ी कर,
बैठण लाग्यो बल जावण नै॥

झर-झर आंसू री धार झरै,
सामैं उभो विलखै राणी'।
"प्रीतम अं'डो दिन आवैलो,
आ सुपनै मे हीं नी जाणी॥

जीवण रा साथी मुख मोड़ो,
कुण सारै जावो छोड़ इया।
साजन सूकली सिसक-सिसक।
तरवर री फाटी डाल् जियां॥

थे मिटो अगन री लपटां में,
हिवड़ै रो इमरत बै'ज्यावै।
थाकी सा-सां निसकारां मे-
हीं, हेत तड़फतो रै' ज्यावै॥

ढल्कै काजल लीकां, बिंदली,
माथै री मांग मिटै, मारू।
सोला सिणगार बिखर ज्यासी,
तन तार सजैला कुण सारू॥

कल् झल् नी झलै कालजै मे,
अण चायोड़ो वैराग दुखै।
जीवण ओ'ड़ो है पीव बिना,
जींवतड़ों जियां मसाण धुखै॥

नैणां रो नीर ढलै साजन,
छेडो जीवण रो जोवण में।
मुखड़ो मुड़ रवै जमारै रो,
बिखर्योड़ा मोती पोवण में॥

रै ज्यासी गूंज, बिखर ज्यासी,
-सै गीत वायरै रै झीलां।
हिवड़ै मे घुटसी प्रीतड़ली,
प्रीतम बिन पाट कठै खोलां॥

लूवां री लपट भतूलां मे,
कलियां री काया कुमलावै।
सायीणा स्याम बिरै' लागो,
विधवा री तन तिल-तिल दाझै।

बादल गाजै, झिरमिर छांटा,
बीजल कड़कै दिल धड़काती।
काजल काली रातड़ल्यां मे,
हूं जा लागूं कुण री छाती॥

सीयालै रा ठंडा झोला,
पलगा दुख दूणो जागैलो,।
भीतर स्यूं निसकारा उमड़ै,
तन तरवर दावो लागैलो॥

आभै वाळी लीली चादर,
हीरां ज्यूं तारा निखरेला।
म्हारी जाजम नित नैण ढुळै,
पलकां रा मोती बिखरैला॥

हिवडै मे प्रीत जोत बाळै,
दिवलै री बाती बुझ ज्यासी।
बैरी ज्यूं चांद बुरो लागै,
गोरोड़ी रातां अणखासी॥

बागां में पंकज पांखड़ल्यां,
आंखड़ल्यां सी खुल ज्यावैली।
हूं हिरणी ज्यूं हर करू पीव,
नो भोर गुलाबी आवैली॥

रंग भीणी कलियां खुले, भवर-
-भूमेला, हू मुरभाऊ लो।
हिवडै रा हार हियो फाटै,
सिर पटक-पटक मर ज्याऊली ॥

मुख मोडो मोवन आज इस्यो,
होवो नैणा स्यू नित न्यारा।
घण रै घण कवलू कालजिये,
इतरी नी पीड़ झलै प्यारा ॥

पल पलकां ओटै कुमलाऊ,
छोडूं जीवण रो साथ किया ?
अेकलड़ी कुंकर जीऊ ली,
हिवडै मे इतरी लाय लियां ॥

कथा कामण रो मन कवलो,
अवलो दुनिया रो धारो है।
ताता झोला ओलो कोनी,
विधवा रो किसो जमारो है !

था विछड्यां साजन कुरख जियां
हूं आखी ऊमर कुरलाऊं।
इण स्यूं तो आछो राख रलै,
वाया मे भेली वल ज्याऊं ॥

बीत्यां हीं बात विछोवै री,
हिवडै मे होली जागै है।
मिट ज्यावां गलो मिला सागै,
म्हो मरणो मिठो लागै है ॥

दो जीव प्रीत मे भूलगोड़ा,
आ भलो मिल्या भेला आवै ।
पण जगरो मेटै बिना ग्रात,
पिछतावो पीव हतो पावै ॥

छोटीसी भूल बणी कारण,
कर मान्यो निमरथ पाप हतो ।
दुनियां रयू न्याव हुयो कोनी,
साजन रै'सी सताप हतो ॥

जीवण कितरो बणग्यो छोटो,
लपटां री ओट लुकै काया ।
लोरी मे प्रीत पालणै री,
गिणती रा सांस पिया आया ॥

अण चेत हेत वालो सुपनो,
इण विध टूटैलो कद जाणी" ।
कै' हतो', धणी री छाती मे-
-माथो दे सिसक उठी राणी ।

अं'ड़ी बिलखै गायक घरणी,
ज्यूं पलका गल् बादल् ढल्ग्यो ।
नैणा रो, गालां होटा रो,
हिंगल् री बिंदली रंग रल्ग्यो ।

करुणा भरगी आखै वन में,
गंगा रै गोरै पाणी मे ।
रूंखां री पाती-पाती मे,
पख्यां री कंवली बाणी मे ॥

अण जाणी एक उदासी सी,
बायरिये री लै'रां घुलगी।
वा पीड़ कलपतै प्राणा री
छलकी जड़ चेतन पर ढुलगी॥

धरणी रै हरियल आंगणिये,
सूनी सी सिसक बिछी घायल।
जद एक अचाणचकी भणकी,
नारी रै पगलां री पायल॥

भिलमिली चानणी री पलको,
ज्यूं आस उजास किरण आई।
फूलां री मीठी सांस जिसी,
तन पर कलियां री कंवलाई॥

पूनम री किरणा घोल्योड़ी,
कुंकूं झलकै उणियारै मे।
जाणै जीवण री जोत जगै,
केसा रै काल़ अंधारै में॥

नैणा मे माय जिसी ममता,
दीठी स्यूं दोस मिटाती सी।
जगताप रुखाली जणनी ज्यूं,
पलका पल्लो ओढाती सी॥

बोली वाणी मे नेव घोल",
"हूं बोल सुण्या इण झुरती रा।
घण कूकै कुरज जियां थारी,
क्यूं जीतो चिता चढै सीरा॥

के दोस कियो तैं ? कुण लूंठो,
धीगाणैं मेटगो चावै है।
कुण धरमराज री धरती में,
हित्या कर पाप लगावै है ॥

जीवण रो धरम जगत जाणै,
दिन दुख सुख रा खाटा मोला।
वो कारण किस्यो, कायरां ज्यूं,
तूं आतम घात करै भोला ?

क्यूं मोत अकाल मर्‌यो चावै,
तन नाख अगन मे राख करै।
ओ कलंक पाडुवा नै लागै,
जे इण धरती पर इयां मरै ॥

ऐंड़ो कुण जबरो जलम्यों है ?
कुंकर मेटै जोरामरदी ?
वा भूल किसी है छोटी सी,
मरणै जितरी मोटी करदी ॥

ओ धरम धाम गंगा रो तट,
है पुन्न परव री आज घडी।
इन्याव करै कुण अपजोरो,
अण चींती ओडी किसी अड़ी ॥

होवैलो अधरम कियां अठै,
धरती है धरम रूखालां री।
सगती ने दुनियां जाणै है,
कैंड़ी करणी कुंताला री ॥

अण हूतो तनै दुखायो कुण,
कुंकर ओ बीखो आय पड़्यो ?
तू निरभै बात बता, बुझै–
–पारथ रो आधो अंग खड़्यो"

इतरो कै' मौन हुई राणी,
गंधर्व नार नर निवण कियो।
नैणां मे झलकै दया मया,
सिर झुका सुभद्रा माण दियो।

गंधर्व आंख नैं पूंछ कयो–
–"हूं चित्रसैन गायक राणी,
सुख रै सुपना मे डूब्योड़ो,
दुख वाली दुनिया अण जाणी।

वायरिये री लै'रां विमाण,
गिगना में तिरतो जावै हो।
आ धरणी छेड़्यो एक गीत,
हूं सुर मे तार मिलावै हो॥

वाणी रै उड़तै भावां मे,
उलझ्योडो सुध-बुध वीसरग्यो,
मन मे, नैणा मे, काया में,
कण-कण मे एक नसो भरग्यो॥

नारी रो रूप कठ [illegible],
नैणा रो नेव [illegible]
बादल सो उम[illegible]
भीतर रो नर [illegible]

आणद री छोलां गर्म हियो,
जद ग्यान लोक सो हो ज्यावै।
माया सी मीठी थाप्यां मे,
लोर्यां मे चेतन सो ज्यावै॥

अंडो ही नींद निमाणी मे,
हूं पीक पान रो थूक दियो।
वो पड़्यो रिसी गालव ऊपर,
आ भूल हुई, ओ पाप कियो॥

अपराध इतो ही, अण जाणै,
बण्ग्यो जीवण रै घात जिस्यो।
तपसी री सुणी पुकार जको,
हूणी रै लवै हाथ जिस्यो॥

उण सिमरथ न्याव कियो अंड़ो,
हिवड़ै मे लाय लगावै है।
आ चूक मावड़ी दंड इतो,
मारण नै दौड़्यो आवै है॥

हूं हलको हीणो घणो हुयो,
तीनूं लोकां मे भटक लियो।
कितरी ही पोलां दुख ढोल्यों,
कोई सबल नी अभै कियो॥

माता थारै नैड़ो नातो,
कंतांई हियो असूजै है।
ओ जको अलूझो, पांडु कुल,
पारथ स्यूं नहीं सलूझै है॥

मोटो है भूप जवर जोधो,
धूजे है दुनियां नांव लियां।
लूठा रा लड दवियोडा है,
ओडी रै आडा अड़ै कियां॥

मत पूछ मावड़ी,' वो कुण है?
सुणता हीं पग पाछा पड़सी।
पोरस रा पा'ड़ झुकै जिण नै,
अबला रो बल कांई अड़सी॥

छेडो दे दीनो छत्र-पत्यां,
हलका होग्या तिणकै सिरसा।
डर स्यूं मद मरै महिपा रा,
नार्‌यां रै बस रा खेल किसा॥

मंगतै ज्यूं सरणो मांग-मांग,
मोटा दरवाजा देख लिया।
अपमान सयो है अण तोल्यो,
कितरा ही विस रा घूंट पिया॥

बाकी नी रही हियो हार्‌यो,
ममता मेटी है जीवण री।
माता अब अभै नहीं मांगू,
सगती नी खारो पीवण री॥

जीवण री भीख घणी मांगी,
आसा मिटगी मन ढल्‌यो है;
सरणो मागण स्यूं मरण भलो,
घर धरम मिट्यो बल गल्‌ग्यो है॥

काया रो मोह कितो माडो,
भरग्यो है हियो गिलाणी स्यूं ।
जग बींध्यो घणो जीवड़ै नैं,
नाकारा वालो वाणी स्यूं ॥

पर हातां तीखा तीर सहूं,
वींधाऊ क्यूं इण काया नैं ।
आतम रा बधण बिडका दूं,
मेटूं माटी री माया नैं ॥

अपमान हुयो, इन्याव हुवै,
वली रै बकरै री ढाल मरू ।
इण स्यूं तो आछो, भार जिस्यो,
ओ तन आपेई बाल् मरूं ॥

धरती रै घूड़ै रलै राख,
कण-कण स्यूं न्याव पुकारैलो ।
आ समराटां रै राज धरम–
–नै, जुगा-जुगा धिरकारै लो ॥

सबला नै एक चुनौती है,
कालख भूपालां रै बल री ।
राणो मा आतम घात नहीं,
आ अपन समाधी दुरबल री" ॥

आं नैणां चरण घणा ताक्यां,
मरणै स्यूं बत्तो कर दीनो ।
अब चिता जगाणी चोखी है,
दुनियां तो घणो सता लीनो ॥

धर धजियां दियो मानखे ने
मन भरग्यो पी-पी पिछतावो ।
हूं सारणो मरणो कूंत लियो,
महाराणी पाछा मुड ज्यावो ॥

फं', गायक हुयो गल्गलो सो,
पलका झुक पीठ लुकावे हो ।
नैणा रै डब-डब डाभर मे,
दुख घुल्यो निरासा न्हावै हो ॥

जद कयो सुभद्रा– "तू गायक,
अपमान अणेसो घणो सयो ।
हिवड़ै मे जै'र इतो व्यापो,
जीवण री लोप लकीर रयो ॥

हूं जाण लियो रै आसा रै,
दिवलै नै बुझा खड़्यो है तू ।
मरणै स्यूं पैलो मिटणै री,
अण ओपी आय अड़्यो है तूं ॥

पण कुण वो अं'ड़ो इन्याई ?
मारण सो मोटो पण रोप्यो ।
बल् स्यूं अपकार करै ऊधो,
दुरबल् पर देव जिया कोप्यो ॥

सगती रै मद आधो बणग्यो,
अदल् मारग पर चालै हे ।
जीवण री कूत इती कमती,
ठोकर स्यूं मिनख उछालै है ॥

अपराध इतो, करडी धुमह्या,
आ बात सुण्यां हीं गोम उठै ।
मत कं' गायक नड़ो नातो,
मन बुरै काळजै टीस उठै ॥

सिर राज कुळां रै राज धरम,
नी मानै अधरम स्यूं नातो,
परतक ओ पाप सवै कुंकर,
ऊं'डो अण हूतो अण सातो ॥

नी पार पड़ै कुंताळां स्यू,
इतरो घण सिमरथ कुण आयो ?
मा'भारत जिसै अळूझै नै,
पांडु रै पूतां सुळझायो ॥

हूं कुंकर मानू हथनापुर,
डर स्यूं सिर नीचो कर लेवै ।
वै सो-सो कैरू काळ जिस्या,
कुताळो एक खपा देवै ॥

भीसम सा अजर सुमेर डिग्या,
बाणां स्यूं बज्जर टूट्या है ।
तेजस्वी अजै करण सिरसा,
पारथ रै हाथां खूट्या है ॥

बळदाऊ किसण जिसा भाई,
आखी अवनी रा थभ जियां ।
पापां नै परळै रा बादळ,
धरती पर रै'सी कस कियां ॥

भारत मे औ'ड़ा भूप खड़्या,
जद लीक धरम री कुण लोपै।
ओकात किसै अपजोरै री,
अधरम पर अड़ियो पग रोपै॥

वल् कुंताल्ां रो जवुआं रो,
चावै इद्रासण उलटावै।
पांडु रै कुल् री बहू अडै,
जम रा पग पाछा पड़ ज्यावै॥

तूं दुरबल नारी मत जाणै
सबलै पारथ री घरणी नै,
अबल्ा मत कै' रे चित्रसेन,
अभिमन्युं वाल्ी जणनी नै॥

गंधर्व लोक रा बासी, तूं-
-भोल्प मे हीं अणखावै है।
भारत मे औ'ड़ी नार्यां है,
पेटां मे सिघ पढावै है॥

धण कंवल्ी जकी सकुतल् सी,
उण भूप भरत सो वणा दियो।
औ'ड़ी सगती सावित्री री,
विकराल काल ने जेर कियो॥

सीता सी सतियां रोह्यां मे,
नर खड्या करै लव कुस सिरसा।
नार्यां रै वल् स्यूं सधै नहीं,
गंधर्व राज वै करम किसा ?

दुरगा गाजै जद दंत मिटै,
वो बल नी मेस महेमा मे ।
दुरियोधन भूप जिमा लुकग्या,
द्रोपद रै खुल्लै केसा मे ॥

नारी निरमल् है भगती सी,
बल इतो जूझै जगती स्यू ।
धरती रा मुलक वर्णै विगड़ै,
मातावां वाली सगती स्यूं ॥

जग री जणनी पालण वाली,
कोपै तो करड़ी काली है ।
सुभ धरम करम मरजादा री,
नारी नर री रूखवाली है ॥

दे रही श्रासरो जीवण नै,
हांचल रै सारै पनपावै ।
वा सगती जे मुख मोड़ै तो,
कं' गायक जगत कठै जावै ?

रल आधो आध अंग पूरो,
जद मिनख लुगाई कुण कम है ।
जे नर है नद पुरसारथ रो,
तो नारी उणरो उद्गम है ॥

तूं कही मावड़ी, दुख टाल्यो,
जद कियां सुभद्रा मुड ज्यावै ।
मावां री जात ऊजली है,
आ कालुख नहीं सही जावै ॥

अणदोस दुखाये दुरबळ री,
म्हारी धरती जीवण हाणी।
अंडे नै सरण नहीं देऊं,
हूं पांडू रै कुळ री राणी ॥

तो सासण रो तप न्याव मिटै,
माथां रो मुखडो लाजै लो।
जे रुखवाळा ही सत हारै,
जद मिनख सांस कूंफर लै लो ॥

चावै, चढ आवै देव धणी,
कोप्यो कोई नरपत मोटो।
आ खरी जाण, इण भोम नहीं,
होवैलो करम इसो खोटो ॥

जे आखी दुनियां मुख मोड्यो,
संकट नीं झाल सकी थारो।
तो चित्रसेन अब डर कोनी,
सरणो है तनै सुभद्रा रो ॥

ओ आयो भार झालस्यूं हूं,
ओ संकट पाडू कुल पर है।
कुंताळां रै घर मे मारै,
देखूंली कुण धरणी-धर है ॥

इमरत सी बाणी राणी री,
मुखड़ै री ओप उजास जिसी।
पलकां रे पळकै मे बिखरै,
सीतल किरणां बिसवास जिसी ॥

गायक रै मुख दुख छगां जकी,
लुकती सी लागै डरती सी ।
नैणा मे नीर निरासा रो,
आसा गागर मे भरती सी ॥

घण विम्भल सी गंधर्व घरण,
राणी रै आगै आ तुळगी ।
जाणै करुणा री लै'र ढळक,
सगती रै चरणा पर ढुळगी ॥

हाथाऊं उठा सुमद्रा जद,
सा'रै ले ढाढस देवै ही ।
ज्यूं ममता सागर कनै नदी,
थाक्योड़ी सिसक्या लेवै ही ॥

जद चित्रसेन बोल्यो—"सगती,
जीवण री बळती डाळी नै ।
वचनां रो पाणी सींच खड़्या,
थे माळी ज्यूं रुखवाळी नै ॥

अधिपतियां जाण कर्‌यां पैली,
सरणै रो बचन दियो कोनी ।
जद जाण पड़ी जाड़ा चिपगी,
सिर ऊंचो फेर कियो कोनी ॥

बो नांव इसो है देव डर्‌या,
सुरगां रा पत सीळा पड़ग्या ।
धरती नै धरदी तोल जका,
सिमरथ पांडु पीळा पड़ग्या ॥

अमरा रा मुखड़ा मरै जिसा,
कोई नी अैंडो कोल दियो ।
ज्यूं राज धरम रो माण वधा,
था सत रारयो उपकार कियो ॥

सिसटी रा मोटा हेर लिया,
च्यारूं कूंटा चपकर खायो ।
ममता पोरस रो नैणा मे,
अैंड़ो नी मेळ निजर आयो ॥

पण तो ही सरण नहीं मांगूं,
आ पीड़ किया पाळीजैली ।
नैड़ो नातो है नेह जिस्यो,
हिवड़ै री कळिया छीजैली ॥

कैतां हीं जीव हुवै दोरौ,
जणनी नीं वात पराई है ।
जदुनाथ द्वारका धणी जका,
थारा वै सागी भाई है ॥

आ जैर बुझ्योड़ै वाण जिया,
दाणी हिवडै मे जा लागी ।
राणी मुरझी, माथो भुकग्यो,
काया मे पीट जिसी जागी ॥

गंधर्व राज री आंखडल्यां,
बा धास लुकी अणजाणी में ।
रंग राणी रो उडतां हीं ज्यूं,
पुळ बही पीड़ रे पाणी मे ॥

मुखड़ो मुरझायो फूल जिसो,
बोल्यो—"हू पैली जागे हो ।
आ वात काळजो चूंटली,
करकै–ली, पीड़ पिछाणे हो ॥

जद हथनापुर सिर झुका दियो,
नीं अरजुन वाळा बाण चलै ।
रण किसो बैन रो भाई स्यूं,
वा किया रगत री धार झलै ॥

जुद्धा, जवरां रा जोर तुलै,
कटणो मरणो मोट्यारां रो ।
जोधा जामै पाळै तो ही,
रण आगण कोनी नारयां रो ॥

मिनखां नै काटै मिनख जठै,
लोही स्यूं धरती लाल करै ।
नारी, जिणरो तन मन कंवळो,
कूंकर ओ अंवळो काम सरै ॥

दे देऊं मार कियां माता,
मन मे पिछतावो नीं आवै ।
पांडू मुकरग्या जद चित्रसैन,
अब थांस्यूं सरण कियां चावै ॥

राणी मां बुरो मती मान्या,
दुनियां रो सत बळ घटग्यो है ।
थारै बस वाळी वात नहीं,
आधो अंग पैळो नटग्यो है ॥

हेमायत ले परदेसी री,
पारथ सारथ स्यू नही अडै ।
कुण रण झालै जदुवा सागै,
तिरलोकी स्यू नी पार पडै ॥

जद कृष्ण कवै है अपराधी,
आखी दुनिया ही मान लियो ।
आधीन न्याव है सबळा रै,
जे बुरो कियो, तो भलो कियो ॥

ओ आछो है हूं एक मरू,
रण रुपियां घण मारचा जावै ।
पण जग मान्यो पापी सिरसो,
इण कारण मोटो दुख आवै ॥

अपराध हुयो है अणजाणै,
हूं दड जितो कोनी दोसी ।
इतरो ही मान मुडो माता,
तो ही उपकार घणो होसी ॥"

दं:, चित्रसेन सिर झुका लियो,
राणी दो डग आगै आई ।
बोली—"जे कृष्ण बड़ा है तो,
तूं लागै ज्यूं छोटो भाई ॥

दुख कोनी सरण तनै दे दी,
रण रुप ह्यावै तो रुप ज्यावै ।
दोरप है, दीन-दयाल जकै,
भाई नै भूंडापो आवै ॥

गोपाळ, करँला इसो पाप,
मरणैं स्यूं बात घणी आगैं ।
मनड़ैं नैं तोड़ मरोड़ दियो,
सुण लाय पलोता सा लागैं ।।

मोटी करण्यां, काळख खोटी,
ओ करम नहीं है बां लायक ।
जदुयां रो मुगट हुवे काळो,
प्राणां नैं पीड़ घणी गायक !

आधार मानखैं रो धिसकै,
दोरप स्यूं हिवड़ो छीजै है ।
अैंड़ी अपरोगी कियां हुवै,
भीतरलो नहीं पतीजै है ।।

हालै है नींव धरम वाळी,
वळ कुंताळा रो नीं कोपैं ।
पारथ ही जे पाछी ताकी,
मरजादा लीक इयां लोपैं ।।

तो आज सुभद्रा एकलड़ी,
जूझैली जोर जुलम सागैं ।
हु जीतां जामण जायै री,
करणी आ काळख नीं लागैं ।।

मन हळको कर मत चित्रसेन,
आ धरा धरम नी खोवैली ।
हूं मर ज्याउं पण मुडूं नहीं,
अणहूंती कदै न होवैली ।।

दुरवळ नै कृष्ण इयां मारै,
पांडू सरणै नै नट ज्यावै ।
दो बंस सासरो पीवर है,
अपजस रै काजळ में न्हावै ।।

धरती उतरै है गगन टूट,
गायक, हूं फू ंकर मुड ज्याऊं ?
नारी जीवण री परख आज,
पत जावै जे पाछी जाऊं ।।

नीं बात एक रै मरणै री,
आ चोट मरम पर आवै है ।।
कुळ, धरम,करम,सत, तेज, लाज,
हूं मुड्या मानखो जावै है ।।

छोटै रै सिर पर हाथ धर्‌यां,
ओ सत पाल्यां ही स्यान रवै ।
मोटी ओ'ड़ी मूं'ढो मोड़्यां,
कू ंकर मोटोड़ो माण रवै ।।

कर इतो भरोसो कळाकार,
करणी मे कसर नहीं राखूं ।
तूं जद मरसी, हूं मिट ज्यास्यूं,
तन नै तेस्यूं पैली नांखूं ।।

मे जीतां भूंड नहीं आसी,
भाई री भींव भुजावां नै ।
पांडू जे भोम रुखाळा है,
नीं सोपै परंपरावां नै ।।

नी अडसी बळ कुंताळा री,
सरणागत पर संकट आसी ।
जद पारथ घरणी दो फुळ री,
पत राख निछावर हो ज्यासी ।।"

कै'इतो सुभद्रा साथ सहेल्या,
सेवक बुला लिया है ।
गधर्वराज नैं सरणैं ले,
रथ मारग घाल दिया है ।।

—:०.—

: २ :

पूत जणै पारथ सो सिमरथ,
कुंती सिरसी मावां ।
वज्जर सो छाती चोड़ी,
लावोड़ी सवळ भुजावां ॥

पोरस वण्यो पूतळो ज्यूं,
सगती स्यूं रगां भरचोड़ी ।
कूंत भरी कसियोडी काया,
ठालो वैंठ घड़चोड़ी ॥

वाका भंवर भंवारा, रातै
डोरै री ग्राखड़ल्यां ।
झळक रयो सूरापो मुखडै,
भू छुड़ल्यां बांकड़ल्यां ॥

केस कळायण मुगट झिळामिळ,
बीजळ झळके ग्रंग मे ।
सूरज किरण लिलाड़ी पळकै,
केसर घुळी रंग मे ॥

हाथ रवं गाडीव जकै नैं,
निदण करैं धरणी-धर ।
धरमराज रो राज मुगट,
ठं'रयोडो जिण काधा पर ॥

बाणा स्यूं रण तोरया, मेटी
ओडो जको अडो है ।
जिण रैं बळ पाडू रैं कुळ री,
ऊंची धजा खडी है ॥

ओ अरजन, वो लूंठो सागर,
पार कियो नीं कोई ।
अड़िया कितरा अपर वळी,
छोळा मे कूत डबोई ॥

बाहू बळ स्यूं मद, कितरैं,
भूपां रा भाग दिया है ।
चुभतोड़ै सेला नै मोड़्या,
जबरा जेर किया है ॥

सगती रो वो रूप जकै नैं,
सूरापो निव ज्यावै ।
अै'ड़ो सबळो विरळो कोई,
जुगां जुगा स्यूं आवै ॥

जिण रो तेज पखाळै सत नैं,
तामस मिटै अधारो ।
सता नैं मींता नैं मीठो,
पाप्यां नैं हद खारो ॥

धरम धरा रो निरभै कर,
अधरम री जड़ां डिगाई ।
ओ पै'लो नर अवतारी,
गीता गोपाळ सुणाई ॥

ग्यान्या रो ईसर, नारायण,
सारथ बण्यो जर्म्म रो ।
घणा जलमिया नर पूरा,
पण इतो माण कुणसै रो ?

स्याम नाव राधा रळिया बिन,
प्रेम रूप नीं पूरो ।
पाप मिटावण कृष्ण वियां है,
अरजुन बिना अधूरो ॥

म्हारथिया रो मुगट मणी,
निरमळ बादळ रै जल सो ।
ओ पारथ भारत रो थंभो,
अचळो हेमाचळ सो ॥

जोगी जिसै युधिष्ठर रै,
सासण री ढाल जको है ।
पीव प्राण रो जीव जोत,
सोहाग सुभद्रा रो है ।

राव रावळै मे वड़तां हीं,
अजब नजारो देख्यो ।
राणी वखतर कसियोड़ी,
उणमुण उणियारो देख्यो ॥

देवराज रो दूजो तन,
घण सामै ऊभ्यो वूझै ।
राणी थयू भ्रो भेम, जकै नै,
पैर सूरवा जूझै ।।

रेसम सिरसो तन वख्तर मे,
करडो किसी जची है ?
राजमै'ल मे रण चढणै री,
फूंकर रोळ मची है !

मरवण क्यो रीस्योड़ो मुखडो,
पलकां भरियो पाणी ?
कोप किसो फूंकर ऊभा हो,
रूस्योड़ी सी राणी ?

रण चढतै सूरां रो वानो,
क्यूं नारी तन साजै ?
आज कियां तातो बायरियो,
भ्रंवळो दिस मे बाजै !

राव युधिष्ठर बळी भींव सा,
जवर जेठ बळ वाळा ।
नकुळ जिसा नरवर देवर,
सहदेव जिसा भुरजाळा ।।

म्हां ऊभा धरणी था ऊपर,
मार कठै स्यूं आयो ?
रगमै'ल मे रण चंडी-सो,
राणी रूप बणायो ।।

किसैं दंत रै कारण दुग्गा
काळ रूप नै धारै ?
४ पारथ री प्यारी धण, कुण पर,
करडी आज विचारै ?

वात अचभैं वाळी भामण,
था अैं भेम किया है ।"
इचरज भरिया नैंण पीव रा,
धण रै मुख टिकिया है ॥

धवळो झिळमिळ तन, बगतर री,
चादर हद करडी है ।
ज्यूं आकार आतमा धर,
५ करमा स्यूं कसी खडी है ॥

बोली पारथ-घरण, पीव नै,
पलकां मे लेती सी ।
वाणी री गंगा फूटी,
मन रो भाखर भेती सी ॥

"नाथ वात अैं'डी चुभती है,
हिवड़ो वींध दियो है ।
सरणै मे आयै नै नटग्या,
हींणो करम कियो है ॥

६ सिघासण धूज्यो पांडू रो,
जग जिणनै पूजै है ।
आज अंधारो अैं'डो, पिव,
मारग कोनी सूझै है ॥

सिमरय कुंताळा रा माथा,
भुकग्या है अकरम नैं ।
सूरापो धरती स्यूं लोपै,
मैणो छात्र-धरम नैं ॥

अणहूंती नैं निवियां पारथ,
मोटो अपजस आसी ।
राज-वंस री काळप, दुनिया,
कदै नहीं विसरासी ॥

धरम-राज री धरती पर,
जे अणहक मिनख मरैलो ।
तो पारथ दुरबळ री दूजो,
रिछ्या किसो करैलो ?

जोरावर जोधा ही सरणो,
सत नै दियां डरै है ।
न्याव पठंगै जकै नरां रै,
वै इन्याय करै है ॥

वीरो म्हारो अंवळो अड़ियो,
जद घण हियो बळै है ।
थारो पोरस अंडो थाक्यो,
पिरथी पाप पळै है ॥

प्रीतम सत दो कुळ रो छीजै,
मरगै जिसी घड़ी है ।
इण कारण हीं आज सुभद्रा,
बखतर कस्या खड़ी है ॥

पाडूं रै कुल रो तप लोपै,
धरा धरम नी राख्यो ।
किया मानखो रै'सी" कै
राणी निसकारो नाख्यो ॥

एक सास हारचे हिवडै रो,
जिया मरम नै खोल्यो ।
आली आखडल्यां मे पारथ,
पीड तोलतो बोल्यो ॥

"राणी चित्रसेन कुण गोमंद,
पैली हिंये विचारो ।
दळ पोरस नै विना बात,
मत तीखा ताना मारो ॥

स्याम जका सुख दुख मे म्हारै,
सदा रचा रुखवाळा ।
आज जिकारी करण्यां लारै,
घर भोगै कुंताळा ॥

जरासिंध नै मेटायो, जद
पाडू कुळ री पोखी ।
मेटया दानव, कस, किता ही,
जिण दुनिया रा दोखी ॥

म्हाभारत रो समंद, जकै रै,
सा'रै पार कियो है ।
जद जद ग्रोडी ग्राई, का'नै,
ग्राडो हाथ दियो है ॥

पाचाळी री लाज राख दी,
भरियै कैरू गण मे ।
पारथ लारै थे आया,
वै घड्यां चितारो मन मे ।

धरमराज रा छत्र मुगट,
सै कुण रै जोर तणा है ।
राणी पांडू रै कुळ पर,
जिण रा उपकार घणा है ।।

उणी कृष्ण रो अपराधी,
म्हारै गढ़ सरणो पासी ।
तो उजळापो किया रवैळो,
कृतघणता रै ज्यासी ।।

सरण दियां रण तो रूपज्यासी,
भली नहीं छूटैली ।
बैर बसैलो गिरधर सागै,
बात नहीं खूटैली ।।

पाडू अधर उठालै, का'नो,
इतरो हलको कोनी ।
आखो जग रळ पण लोपादै,
राणी बळ बो कोनी ।।

देवराज जद मौत आपरै
रो, नी बोझ उठावै ।
दूजो कुण अबखी मे कूदै,
लाय बिचाळै आवै ।।

सेल सिखर रो अजै सदासिव,
भार नहीं झाल्यो है ।
अम लोक रो धणी, जकै नै
पग धरता पाल्यो है ।।

वैकूंठा राजेसर जिण नै
नीं सरणो है देवै ।
उण पापी रो संकट सिर
पाडू ही कुंकर लैवे ।।

दंड मिलै दोसी नै, जिण रै
कोय न आडो आवै ।
तीन लोक नीं ओटै, फेंडू
क्यूं बो भार उठावै ।

चित्रसैन वैभव मद डूब्यो,
आपो जे न बिसरतो ।
धरम रूप गोमंद-सो ग्यानी,
अैंड़ो पण नीं करतो ।।

तपसी री काया पर थूकै,
मिनख मरण जोगो है ।
सरण इसै नै पाप करम है,
नहीं करण जोगो है ।।

क्यूं अपराधी री हेमायत,
ऊंधी बात बधावो ।
रगतां स्यूं भोमी भीजै,
मत अैंड़ो रण रोपावो ।।

म्हाभारत रो रातो ग्रोजूं
सूक्चो कोनी राणी ।
जुगा-जुगा नीं पूर सकै जग,
वां जोधा री हाणी ॥

ग्राज फेर रण जदुवा स्यूं,
ग्रण चीती राड हुवैली ।
घाण मचैलो मिनखा रो,
ग्रा धरा उजाड़ हुवैली ॥

बाप बायरा बालक बिलखै,
विधवा वा री टोल्या ।
एक चिणख नी बुझ्या,
जगैली जाणै कितरी होल्यां ॥

ग्रणगिण मारचा जाय ग्रकारण,
राणी पाप बड़ो है ।
मिनखा री धरती रै सिर पर,
रण रो श्राप बड़ो है ॥

काया भार बणै माया,
मत पकड़ो बा ग्रपरोगी ।
एक ग्रकरमी खूटै टूटै,
बात नहीं रण जोगी ॥

जे थे मानो बिना विचारयां,
गोमंद गायक मारै ।
तोई जोर भलो नीं लागै,
जदुवां स्यूं ग्रांपारै ॥

पाप कठैरो, क्यूं सिर सांभां,
श्रो श्रड़णो भेंड़ो है ।
गिरधर ग्यानी है, मित्तर है,
दूजां स्यूं नैड़ो है ।।

सबळ मींत स्यूं वैर श्रकारण,
किणी भांत नीं सो'वै ।
भारत री दो मींव सगत,
क्यूं श्रापस मे रण होवै ।।

पांडू जादव एक मुलक री,
काया रा भुज दो है ।
ह्थनापुर जे मिटै द्वारका,
श्राछो करम किसो है ।

हाय, हाय नै काटै, श्रैंड़ो
मारग मत श्रंवळो लो ।
भली बुरी नै तोलो मन में,
इसिया बंधण खोलो ।।

श्रणभांतां बखतर काया,
थां कूड़ो कोप करचो है ।"
कै, पारथ धण रै कांधै पर,
धण हित हाथ धरचो है ।।

धरा ताकती खड़ी सुभद्रा,
ज्यूं सुपनै स्यूं जागी ।
पहूप पांखड़्या सी श्रांखड़ल्यां,
प्रीतम रै मुख लागी ।।

राणी रैं कोयां में दीसैं,
अरजुन रो उणियारो ।
लाली भोर उगाळी मे,
ज्यूं जाभरकं रो तारो ॥

कंवळोडै कंठा री वाणी,
तीखो ताप भरयोडो ।
छळक रयो सवदां राणी रैं,
मन सताप भरयोडो ॥

"कंथ, वात रो तंत इतो है,
थोथीं सत्ता थारी ।
पाडू कुळ रो सासण, भोगै,
दवियारी जदुवा री ॥

राज नीति, ने, नाता स्वार्थ,
साध्यो धरम भूलग्या ।
दया दूबळा रा रीछ्या रो,
मोटो धरम भूलग्या ॥

सूरा री पत लोपो,
सरणो सत नैं दियां डरो हो ।
धरती रा बण रुखवाळा,
भूठो धणियाप करो हो ॥

कान्ह सामनैं दीख्यां, कूड़ो,
मन समभाय सड़्या हो ।
जुद्धा स्यूं जग जीत, जुद्ध नैं,
आप बणाय सड़्या हो ॥

जद सूरापो म्हा'भारत रो,
आज इयां भोगो हो ।
पुरसारथ रो पुन्न, जकै नैं,
पाप जियां भोगो हो ॥

सबळ मीत अकरम अड़िये स्यूं,
सत्ता भै खावै है ।
होळी सिलगा मिनखपणै री,
रण टाळ्यो जावै है ।

भूल्या कूंत अणूंत हूंत री,
भूपत अैंड़ा होग्या ।
आज सिमरथां रो सत डूबै,
नाता नैंड़ा होग्या ॥

भली वंधै हद मरजादा री,
लीकां लोक करम री ।
मितरता निज स्वार्थ बणग्या,
सीवां मिनख धरम री ॥

पण आ राख रखापत राख्यां,
करम लुकै नीं काळा ।
धरा धरम छोडे जे भुकसी,
कायर ज्यूं कुंताळा ॥

कूड़ कपट ओटै जे प्रीतम,
मन समझायो जासी ।
नाड़ निवायां रण टळ ज्यासी,
फळ तो सामा आसी ॥

परतक दवियारी री सासां,
बायरिये बेवेली ।
वडे नरां री वातां, दुनिया,
जुगा जुगां फेवेली ॥

राज धरम जे निवै जुलम नै,
सत्ता री सत ढळिया ।
सगती री मरजादा मुरझै,
पुन्न करम री कळिया ॥

जद अकरम सिवां नै तोड़ै,
जे नीं रगत खिडैलो ।
तो मिनखां री नडां, रातो
पाणी ज्यूं वण रैलो ॥

जुद्ध टल्यां गिणती वध ज्यावै,
पिंड मांस रा पारथ ।
कायर कूड़ा सांस लेवता,
मुड़दा मिनख अकारथ ॥

बाप बायरां हींणा बाळक,
तत बायरा होवै ।
सत हींणा री सधवां वां हीं,
विधवां थां ज्यूं रोवै ।

अंडै काळै जीवण स्यूं तो,
आछो है मिट ज्यावै ।
दुनियां मरै जिसी होगी है,
सत सरणो नीं पावै ।

निवळो एक जकै री रिछ्या,
आखो जगत नटै है ।
सिमरथ भूपां समराटां मे,
चाकी तंत कठै है ?

तीन लोक री महमां लोपी,
सगती न्याव करण री ।
अमर नट्यां दुख भोगण रै डर,
दोरप मिनख नटण री ॥

धूजै देव विलास नास स्यूं,
बस नी मरण जकां रै ।
हाथ जोड़ हरदम हीं हाजर,
काळ खड्यो मिनखां रै ॥

अमर मरै नी मरणों चायां,
जद दुख स्यूं डरणो है ।
मिनख निवै क्यूं अणहूंती नै,
अंत पंत मरणो है ॥

सत, पत, न्याव, धरम, धरती रै
कारण जका न जूझै ।
बै जलम्या हो मरै सरीसा,
ठोड़ मरण नीं सूझै ॥

गिरधर थारै तो मित्तर है,
म्हांरै बाप जिसा है ।
परम पुरुष सा, पूजण जोगा,
बड़ा धरम सिरसा है ॥

पलक टिकै नी जवै तेज पर,
ग्रै'ड़ा तिमरय भाई ।
माथो निवै जकारै ग्रागै,
वा स्यूं किसी लडाई ॥

पण जिण तेज तिलोकी उजळो,
अकरम ढाक रयो है ।
अकळंक चाद फरण काळो,
ज्यूं राहू ताक रयो है ॥

जदुपत रो पग ग्राखडग्यो है,
थानै हेलो मारै ।
पांडू कुळ कृतघ्न होसी,
जे डिगतां नहीं उवारै ॥

का'नै री कीरत पर, कोभी,
काळख लाग रयी है ।
प्रीतम प्राण जगै, भीतर वै,
लपटां जाग रयी है ॥

पीड़ हियै री दीखै कोनी,
तोल करचो नीं जावै ।
अपरोगी ग्रै'ड़ी भैड़ी है,
सैं'णै मे नीं ग्रावै ॥

मन रो बोझ सबद नीं सांभै,
बोलूं तो के बोलूं ।
ग्राभो धरा भिळै है पारय,
बखतर फूंकर खोलू" ?

चोल अणेसैं भिळग्यो घण रो,
आसू सींव विसरग्यो ।
ज्यू कोई वैरागी, माया
बधण तोड़ निसरग्यो ॥

अवखो भेस सहज सो नारी,
पलक प्राण पट खोल्यो ।
एक अळूझै मे उलझ्योसो,
पारथ पाछो बोल्यो ॥

"राणी भार हिये पर थारै,
हद कर बधग्यो लागै ।
जद औ बखतर नीर नैण रो,
रण री जदुपत सागै ॥

जे इतरो मोटो मान्यो थां,
सरणांगत नै नटणो ।
मितरता रो मिनख धरम रो,
हेलो जे रण खटणो ॥

कृतघणता रो पाप का'न स्यूं,
नहीं अड़्यां जे आवै ।
तो रण भाल तिलोकी स्यूं,
पाडू रो कुळ टकरावै ॥

पारथ रण स्यूं डरै, जलम रो
मैं'डो रात नहीं है ।
जे गोमद घण सिमरथ,
म्हांरा हळका हाथ नहीं है ॥

पण चीता अपराधी गायक,
जीवण धरम क मरणो ।
घडी-घडी मन दुबधा भोगै,
के करणो नी करणो ॥

एकै कानी पण जिण रो,
यो जगत गए निरमो है ।
दूजै कानी थे अडग्या,
कुण जाणै धरम किमो है ॥

पाडू-वस जकारी वाणी,
धरम जिया कर मानी ।
धरमराज वै गया तीरया,
धरा धरम रा ग्यानी ॥

लारै अणचीत्यो अवखो,
ओ आटो आय अडयो है ।
राज धरम री छाण करण रो,
भैंडो भार पडयो हे ॥

म्हाभारत में मन अटक्यो,
जद मारग जकै बतायो ।
घणै माण स्यूं जिण गोमद रो,
हूं नित हुकम बजायो ॥

थे मानो बो गीता गावण,
मारग स्यूं आखडग्यो ।
सूरज किरण हुवै है मैली,
इसो अंधारो अड़ग्यो ॥

क्यूं अणहूता हो अड जदुपत,
निनख मारणो चावै ।
ग्यानेसर हो गूगा होग्या,
मानण मे नी आवै ।।

पण जे थारी वात साच,
अणहूती गायक सागै ।
जे वेजा है तोई थांनै,
इती बडी क्यो लागै ?

एक भूल जे हुवै, किया है
संकट धरा धरम नै ?
ऊचो घणो उछाळो हो थे,
अणजाणै अकरम नै ।।

फूंकर पुन्न धरण रो उळटै,
मरणो एक मिनख रो ?"
जद धण वात विचाळै काटी,
वोली—"पारथ ठै'रो ।।

राजा रावण अकरम अड,
सीता हर लक लुंटावै ।
पण जे राम मंदोदर हरलै,
जगत कठीनै जावै ।।

प्रीतम अकरम छोटो मोटो,
करता स्यूं कूंतीजै ।
अरण, कंस वणियां नीं वाकी,
धरा धरम उळटीजै ।।

सिमरथ जदुपत हाला हिया,
कठै पाप नी लेतो ।
थे अकरम रा गैं गिरधर री
गौरव वय नी देतो ॥

हरि डिगिया धरती अधारो,
तप लोपै रणिया रो ।
जगत पटंगै जकै नरा रै,
पाप भिळै भुज वारो ॥

पीक भूंन स्यूं रकण कारण,
मरण घणो मोटो है ।
हद अणहूतो अकरम होवै,
थे मानो छोटो है ॥

अभिमन्यू रो मरण अणूतो,
वो दिन याद करो थे ।
चींतो कितरी पीड़ हुवै,
छाती पर हाथ धरो थे ॥

अणहक मरणो एक मिनख रो,
सास अमूंज रही है ।
गायक रै घरणी री सिसक्यां,
काना गूंज रही है ॥

जदुपत परतक पाप भिळै है,
हळको कियां कहीजै ।
नहीं–नहीं प्रीतम, आ काळख
मैं स्यूं नहीं सहीजै ॥

हरि री महमा लोप हुवैली,
भारत मिळ ज्यावैलो ।
कुण जाणै औ अकरम, हारै
किता पाप लावैलो ॥

खेल जुवै रो अकरम हो, वो
कितरा पाप जगाया ।
वैभव लोप्यो काळख आई,
कुताळा दुख पाया ॥

आज लारली बीती वातां,
सुपना सिरसी लागै ।
कैरु कुळ रा वै सिमरथ,
जद झुकिया अकरम आगै ॥

दुरियोधन री भरी सभा,
दुखियारी द्रोपद रोई ।
उण दिन सूरां आख मींचली,
भीड़ पड़्यो नी कोई ॥

किती आस ले आंख, लुगाई
जोधां सामै ताक्यो ।
भीसम द्रोण जिसा मोटा नर,
सगळां हीं सत नाख्यो ॥

ग्यान, करम, बळ, कुळ मरजादा,
धरम छीण सैं' होया ।
वो अकरम कैरू रै कुळ मे,
बीज नास रा बोया ॥

आज पान्डवा रै घर मे,
रन् घिर आई वै घड़िया ।
चित्रसैन री आग्या मे,
द्रोपद री आनू लड़िया ॥

धरम कुताळा कुताळा रै
सत सरणो नी पामी ।
तो दुर्योधन धम्मराज मे,
भेद किसो रै ज्वामी ॥

पारथ दयूं कुरखेतर में,
दिन हाण घाण रा आया ।
देखो केरूपत रै अकरम,
कितरा जोध खपाया ॥

कितरा मूंगा रतन विखरिया,
किती उछाळ हुई है ।
रगता रा खाळा वै'ग्या,
धरती कगाल हुई है ।

द्रोण गरु पूजा अधिकारी,
भीसम जिसा वडेरा ।
कैरु रो मोटो कुळ खपग्यो,
सूना पड्या वसेरा ॥

दानी जबरा वीर करण सा,
जेठ जमी पर सोग्या ।
जाणै कितरी मानडिया रा,
खोळा खाली होग्या ॥

धरती अधर उठा लेता
ज्यूं तिणका ज्यूं टूटचा है ।
कारण किसो अखूटा इतरा
नर नरवर खूटचा है ॥

पग-पग मुकट रुळ्या जोधा रा
पग-पग हाड पडचा है ।
कुण कारण छेकड भाया स्यूं,
पाडू अडचा लड़चा है ॥

अकरम हीं मेटण नैं, पारथ,
थो वो रगत खिडायो ।
मिनख धरम जुग-जुग जुझ्यो है,
जद-जद अकरम अड़यो ॥

पण ये जकै धरम रै कारण
वडा वडेरा मारो ।
आज अरुण जद सामा आया,
वो ही कियां विसारो ॥

सूर धरम जिण कारण जोधा,
सदा लोवडा लागै ।
जद अकरम रो रावण आवै,
राम मिनख मे जागै,

आज थकै वो राम थांरलो,
सत रो तेज ढळै है ।
कुंताळा रो जियां मानखो,
माटी मांय रळै है ॥

म्हाभारत मे निरख्यो, वो
वीरा रो रगत पुकारै ।
धरम जुद्ध रा धरम रुखाळा,
ऊभो किया कनारै ॥

जिण धरती पर पड़ गे फुळ,
अकरम मेटण जूझै ।
निवै जगत उण कुरखेतर नै,
धरम खेत कै' पूजै ॥

पण जे सरणै आया आडा,
थारा भुज नी आवै ।
वा म्हाभारत भोम वालमा,
पाप खेत वणज्यावै ॥

स्वारथ खातर पांडू अड़िया
आखो जग कै'वैलो ।
धरम राज रो जद नी अै'ड़ो,
धरा माण रै'वैलो ॥

प्रीतम थे कायर बाजोला,
माड़ी बात किती है ?
छात्र धरम पर आ काळख तो
जीतां मरण जिती है ॥

आज सरण आये रो संकट,
जे पांडू नी झालै ।
तो जुग-जुग वळ कुंताळा पर,
धरती धूड उछाळै ॥

धरम करम सत्ता सत थारो,
सो अकरम रै हेटै ।
छोटी बात किया थे समझो,
जकी मानखो मेटै ॥

म्हारै तो हिंवडै मे खडकै,
एक चढै उतरै है ।
धरती रो थभो हालै है,
गिरधर जुलम करै है ॥

थे आगो पीछो जोवो हो,
दुवधा स्यूं मन भरियो ।
अबला जलम लुगाई रो,
जीवण मे आज अखरियो ॥

अभिमन्यूं रो मरण आज,
मोटो वण सामो आवै ।
हारथोडी सी हुई सुभद्रा,
कुण पर हुकम चलावै ॥

तोही हियो हठी उफणै,
भीतरलो सारै कोनी ।
जुलम नहीं सै'णी आवै,
हारयां हीं हारै कोनी ॥

पारथ कियां वतावो ओ मन,
धींगाणै स्यूं धीजै ?
कियां अपूती नै हूंतो कै,
भूठी साख भरीजै ?

कियां कहीजै सिमरथ धरती,
हद होणी दुरबळ नै ?
एक सबळ रो बळ दावै है ,
जग रै आतम बळ नै !

कूड केवटै दंभ मुनी रो,
जदुपत पाप पडै है ।
ग्रैंडी हुई निछत्री, सत पत,
कोई नहीं ग्रड़ै हे ॥

मिनख इसो मिनखा रो मरग्यो,
सै ग्रकरम री साजै ।
पोरस हीण पुरस री दुनिया,
नारी निविया लाजै ॥

जद ग्रै बख्तर सस्तर साथी,
एक भरोसो सत रो ।
थे ऊभा पण भार सुभद्रा पर,
दो कुळ री पत रो ॥

हूं ग्रसरण नै सरणो दीनो,
हूं हीं जुद्ध करूंली ।
गिरधर जव गायक मारैला,
पैली जूझ मरूंली" ॥

ग्रै राणी रा बोल बांण सा,
ग्ररजुन रो नर जाग्यो,
ग्राभै ज्यूं ढक लिको हियो,
पोरस रो बादळ छाग्यो ॥

गं'र गंभीरो कोप ओपनो,
आय खड्यो नैणा मे ।
जद राणी रो मरम वोनग्यो,
पारथ रै वैणा मे ॥

"वम घरणी वस करो,
हियै रो हेमाचळ हालै है ।
घणो भुळसग्यो नर पारथ रो,
अब झळ नीं झालै है ॥

म्हारी हरि पर अधा, उण स्यूं
वडो ओळभो थारो ।
अब गोमंद नै अरघ मिलैलो,
रण आंगण रगता रो ॥

आखड़तै मितर रै आडो,
पारथ रो भुज अड़सी ।
थे तो गिरधर आपो चींतै,
नी, पण पाछो पड़सी ॥

घरणी अरजुन रै आधै तन,
जिण नै अभै कियो है ।
सिमरथ पांडू कुळ री राणी,
जीवण दान दियो है ॥

राज वंस वंधग्यो है पारथ,
जद घण कोल करयो थां ।
बात खूटगी जद गायक रै,
माथै हाथ धर्‌यो थां ॥

दावै जितरो सिमरत कानो,
धन पण नहीं मरैनो ।
लाज जात, सरणागत राणी,
भागो नहीं मरैनो ॥

धरती पर धणियाणो, आपो
पाडू कुळ रो रैं'सी ।
धरमराज दुरियोधन मिन्नो,
दुनिया कदै न कै'सी ॥

जीत किसी म्हा ऊभा थां पर,
भीड़ किया आवैली ।
पारथ रा भुज थाक्या पैली,
भोम उळट ज्यावैली ॥

थे बख्तर सस्तर छोडो,
था ताई भार नहीं है ।
जुद्ध नरां री जोरा मरदी,
फवळा कार नहीं है" ॥

इतरो कै'तां पारथ री,
अणजाणै भुजा धनुस पर
जद राणी रै एक जुद्ध,
दूजो ही छिडग्यो मन पर ॥

नारी जीवण पीर सासरो,
दोनू हीं म्हारा है ।
पारथ सारथ किसो परायो,
दोनू हीं प्यारा है ॥

आज रगत रै नातै सार्थ,
सिर री माग अडै है ।
हिवडा हाय हुई अवखाई,
कितरो बोझ पड़ै है ॥

एकै कानी पीव जीव रो,
म्हारो जूण जमारो ।
दूजै कानी जामण – जायो,
वैनडली नै प्यारो ॥

ओ सासू रो नैण चानणो,
वो हिवड़ो जामण रो ।
राखी रै तारां स्यूं तुलसी,
आज सेवरो धण रो ॥

वै भाई, सोहाग अठीनै,
कुण री खैर मनाऊं ।
दोना कानी खडचो अमंगळ,
मंगळ कुण रो गाऊं ॥

जीत किसै री जै बोलीजै,
हद भारी खारी है ।
हूं पीड़ीजूं दोना कानी,
हार सुभद्रा री है ॥

मनड़ा ठोड ढूंढ ठैरण री,
नगक किती भटकासी ।
अरे मानखै री मरजादा,
अंतस कितो धुखासी ॥

आई प्रीतम दोन् भागी,
मन नारी रो रोयो ।
पीड घणी पलका मे,
राणी पारथ सामै जोयो ॥

बोली "हिवडै नै कसममतो,
जको बध तो गुनग्यो ।
जीवण रो अधिकार मिनख रो,
दो सगत्या मे तुलग्यो ॥

पण ओ राजधरम राणी रो,
जिण रण रोपायो है ।
पीव हिये दुरवळ नारी रै,
सकट अब आयो है ॥

बख्तर कूकर खोलूं,
मन पर दूजी अणी अड़ै है ।
नैचो करतां नहीं बणै,
भाई भरतार लड़ै है ॥

पीव जीव मे लाय लगाती,
अै घड़िया धूजावै ।
पल-पल भार बधै परळै सो,
हद हिवड़ो दुख पावै ॥

पलक ओट सै'णो नी आवै,
गोट किताही जागै ।
आज घोट हूती रो ओटो,
घणो अणूंतो लागै ॥

प्रीतम इतरो मानो,
रण मे सागै आज रहूली ।
वज्जर जको पडै छाती पर,
आख्या देख सहूली ॥

जदुपत स्यू थारो रण होसी,
चींत्या हीं मन छीजै ।
आज मै'ल मे जी नी लागै,
सागै रया पतीजै ॥

नारी रै मन री गत वालम,
नारी आप अजाणी ।
कियां वताऊं'' कै' पारथ रै,
हिये लागगी राणी ॥

—o—

: ३ :

सोनै मंढिये रथ मे जदुपत,
किरणा सी झिळमिळ काया री ।
ज्यूं ग्यान जोत झाकी झळकै,
ले ओट मो'वनी माया री ।।

घन घुळयो चानणी दूधाळी,
झीणै पीताम्वर रेसा मे ।
सिर मोर मुगट पळकै कुंडळ,
लै'रातै काजळ केसा मे ।।

आखड़ल्यां हेम हियो करती,
हंसां रै मानसरोवर सी ।
उणियारै जोत अखंड जकी,
तुरियै ग्यान्यां रै गौरव सी ।।

जिण री वंसी रो राग जाग,
मन-ताप हरै तिरलोकी रो ।
जन-जन रो मो'वन ओ मोवन,
आधार अखूटो अवनी रो ।।

चोरां रै माखण चोर रो
चितचोर गोपीयां आळो है।
ओ कान अचपळो छोरा ने
भोळो गाया रो ग्वाळो है॥

छैलां मे ब्रज रो अलबेल.
रसिका रो रासबिहारी है।
राधा रो हिवडो हरण स्याम.
संतां रो सुख अवतारी है॥

नटखटियो लाल जसोदा रो,
ओ कळाकार रो नटनागर।
दुबळा रो मीत सुदामै रो,
भगता नै इमरत रो सागर॥

ओ काळ कंस रो, क्रांतीदूत,
डूबतडां रो गिरधारी है।
लूंठां मै धीस-द्वारका रो,
गोकळ रो कुंजविहारी है॥

पांडुडां राज रुखाळणियो,
सत लाज रुखाळो द्रोपद रो।
पारथ रै प्रेम बंध्यो सारथ,
वैरी दुरियोधन रै मद रो॥

मोहित कैरू री सभा करै,
बो धातर दूत जुधिस्ठर रो।
ममता भिळ बेसुध बिदुराणी,
महमान बिदुरजी रै घर रो॥

कुरखेतर पार-सुदरसण री,
खप्पर भरतो पाचाळी रो ।
मिळतै भारत आधार जको,
टींटोडी री रखवाळी रो ॥

ध्यान्या आळो धूर ध्यान रूप,
गीता गावण ग्यानेसर है ।
ओ करम जोग रो अडिग थभ,
नर है नारायण ईश्वर है ॥

भारत री अमिट विभूति है,
इचरज है आखी अवनी रो ।
निरलेप करम रै काजळ मे,
सिमरथ ओ लाल देवकी रो ॥

जग मायारात, माणसा नै,
आसा री किरण उजास जको ।
पारथ सागै टकरण चाल्यो,
पांडव कुळ रो विसवास जको ॥

जदुपत चींतै मन ही मन मे,
मिनखां रै मन री निबळाई ।
चेतो चूक्योडो कळाकार,
परबत सो भूल बधी राई ॥

बो पीक पान आळो छांटो,
आंटो कितरो मोटो वणग्यो ।
मन मथ्यो रिसी रो, ग्यानी रो,
त्यागी रो अहम कितो तणग्यो ॥

वण रीस-रोस राती-पीळी,
वळती-झळ गालव री काया ।
जदुगण नै झळ मे झाल लियो,
जोधा रा हिंवडां सिळगाया ॥

अधरम री हद है श्रो अकरम,
जदु जोधां ताती सास भरी ।
धरती रै पुत्र, प्रतिष्ठा पर,
जिण इसी अणूती चोट करी ॥

वो पापी जीवण जोग नहीं,
मिनखां रो रगत उफण बोल्यो ।
तपसी रै मन रो ताप ढुळ्यो,
पण वणग्यो रण-रसतो खोल्यो ॥

इण राज-भोग रै मारग मे,
विखरचा कितरा तीखा कांटा ।
अणचाया किता अळूझा है,
गाठा कितरी? कितरा आंटा ॥

गंधर्व, जक्ष नै धरम आज
जदुआं रो मेटचो चावै है ।
उण री हेमायत छात्र-धरम,
पांडव रो आडो आवै है ॥

आवै वो जको हियो देवै.
हरियो हो बाथा भर लेवै ।
कं'मींत-सखा, हद घणै हेत
डूंघोड़ो सो ला'वो लेवै ॥

वो आज किसन रो काया पर,
बाणां री चोट करण चढ़ग्यो ।
कुंताळो बणग्यो रथवाळो,
नायक नै ओट करण चढ़ग्यो ।।

पण पारथ नर भावां भरियो,
कुण जाणै टेक कियां रै'सी ।
जे सामै आ, आयो भूलै,
चिरभळ स्यूं बाण किण वै'सी ।।

कुरखेतर मे हीं घडी-घडी,
जिण रो मन उड-उड भागै हो ।
कैरु छीजै रा, देख-देख,
वैराग जकै मे जागै हो ।।

भीसम स्यूं, द्रोणाचारी स्यूं,
लड़तै रा भाव भटक ज्याता ।
हूं करतो कितरो सावधान,
पण रै'रै' हाथ अटक ज्याता ।।

पुण चेतावैलो आज वियां,
जे मन कंवळाई जागैली ।
हुरापो नेव बंध्यो निवसी,
तो हद स्यूं हळकी लागैली ।।

सिर आयो करड़ो करम इसो,
ज्यूं इमी मान बिस पीणो है ।
पारथ प्यारा मजबूत रही,
जोधा रो मारग भीणो है ।।

नी आज किसन गीता गावै,
आपे ही मीत चितारे तूं ।
विसवास, आस कर सारथ री,
हर फर हिवड़ो मत हारे तूं ॥

समझै मितर री मजबूरी,
हूं मींत मिटावण आऊं हूं ।
माथै री मांग सुभद्रा री,
मन जोत बुझावण आऊं हूं ॥

गायक रै जीवण रो ओटो,
आं हाथां ढावण आऊं हूं ।
हथनापुर रो सत सूरापो,
बळ नै उल्टावण आऊं हूं ॥

सिर ले ग्यानी रो अहम् ताप,
तन लोक धरम रै बंधण में ।
टाणा मे काळ लियां आऊं,
हूं आप जिया वधतो रण में ॥

रण करम खेत कुण स्याम सखा,
मत चींतै दूजण जोगो है ।
दर धरम रुखाळो सूरापो,
तूं सतपत जूझण जोगो है ॥

पर दुख पड ग्रैं'ड़ी झट झालै,
दूजो कुण सिमरथ त्यागी है ।
पाछू मत भूले, तै पर ही,
भवनी री आंख्यां लागी है ॥

तूं मोटी आस मानर्ती मी,
गळ-ढळिया आज सरै कोनी ।
ज्यूं नीलकंठ ही झाल सकै
दूजै स्यूं जै'र जरै कोनी ।।

पण पाळण किसन बण्यो आवै,
रोकण नै तोन भुजावा नै ।
नितर प्यारा काचू रागै,
मनड़ै रै दुरबळ भावा नै ।।

इण तरियां हेत हिलोरा मे,
हरि हियै रो अरजुन समझावै ।
नर तन मे वसियो नारायण,
नर ज्यूं चिंतन करतो जावै ।।

लै रातै अंतस उथल-पुथल,
जद धरमराज री हद आगी ।
बळ उमड़ रयो हथनापुर रो,
सैना पर दूर निजर लागी ।।

पाडूगण रा रण मतवाळा,
वध आवै दिग्गज थर्रावै ।
जदुगण जोरावर-जबर जोध,
थळ धिसकता सामां जावै ।।

आगै आतै पारथ रै रथ,
इन्दरज स्यूं आख अटक रै'गी ।
सेलै री इणी सुभद्रा ज्यूं
गोमद रै हिये खटक रै'गी ।।

तन-बख्तर कसियोडो सारथ,
रथ बधा सामनै लावै ही ।
रणचडी सो, निजरां पसार,
जयुवा रो जोर तकावै ही ।।

नर रै ग्रणडिग पोरस आगै,
नारी तन उजळै भाव जिसो ।
रण काळ जाळ रै अधारै,
उठतै भुज रै अटकाव जिसो ।।

ज्यं पाळ पड्'पा पण काठै
मन री करडाई गाळ रही ।
भाई रै आडो वे'न आज,
सिर रो सोहाग रुखाळ रही ।।

सावळ रै सदा सुरंगै मुख,
झाई सी झळक उदासी री ।।
ज्यूं मोह छळचो ग्यानेसर नै,
ग्रालो आख्या अविनासी री ।।

अण भातो खारो सो गुटको,
ज्यूं एक जै'र रो घूंट भरचो ।
एकर मींचो पल पलकां नै,
हरि मन मोडघो ,मजबूत करचो ।।

निसकारै सागै नैण पूछ,
ज्यूं काठै करतब हियो दियो ।
इतरै रथ पूग्यो पाडू रो,
नेडै आ दोना निवण कियो ।।

आसीस उठाोो भुज भारी,
प्ज्यो सिमरथ गिरधारी रो ।
सामै मुखड़ा हेतूना रा,
भगनी रो, नर अवतारी रो ॥

सिर सीधो कर अरजुन बोल्यो,
"मुजरो ही आज घणो मान्या ।
रण आगण मे आमां सामा,
रोजीनै दाई मत जाण्या ॥

जिण घर कुंकूं केसर विखेर,
पूज्या थानै नित माण दियो ।
मोटी करण्या आळा धणिया,
कुताळां लुळ-लुळ निवण कियो ॥

उण धरमराज री धरा आज,
खांडा खांच्या है स्वागत नै ।
गंधर्व पठंगे मे आयो,
म्हे अभै करयो सरणागत नै ॥

हरि आज मुड्या अग्गर चन्नण,
वधियां रगता तरपण होसी ।
गायक स्यूं पैली पारथ रो,
सिर आ चरणां अरपण होसी ॥

पण पाळ्यां नास खरो जाण्या,
अड़णो अरजुन रै हाया स्यूं ।
आ सीख थांरली, नाता स्यूं
घण बडो मानखो माया स्यूं ॥

जद भीसम नो दादो [illegible]
मारयो है [illegible] [illegible] भाई ।
लाखां रै [illegible] [illegible],
हू मिनख मानवै [illegible] ॥

जिण धरम कारणं अपन्वळो
चण नेता मोड्या–नोड्या है ।
वै आज उठैना या ऊपर,
अरजुन रा हाथ वध्योटा है ॥

कैंपाड़ू जद बोलो रैंग्यो,
मधरै कंठां मोवन बोलै ।
"पारथ थारो बळ घण सिमरथ,
धदकै स्यूं धर–दिग्गज डोलै ॥

सिव भूतनाथ स्यूं भिड ज्यावै,
हू जाणू हूं वां हाथां नै ।
जोधा स्यूं अडतां देख्या है,
पडता देख्या धड माथां नै ॥

सामै सिर सांभ खड्यो सूरा,
सागर सो सवळो लागै है ।
तूं एक घणो गायक ओटो,
पण आज सुभद्रा सागै है ॥

थे दोनूं ही रळ आ ऊभा,
मन मोड मरोड नहीं बाकी ।
पण गळै मुड्यां, मन बळै बध्यां,
पग सिरकण ठोड़ नहीं बाकी ॥

मुडता [illegible] दरस धरम जावै,
बधतै रो जो दुख पावै है।
पण जीवण री पैंडी घाटया,
मिनखा रो मोल बतावै है ॥

हू मोह दुख कायर वाई,
पग पलट पावडो धक लिया ?
हू कळाकार स्यू ग्यानी नै,
कै' पारथ हळको करू लिया ॥

मन री दुबळाई दुबधा स्यूं,
हू कदै थकयो नीं थाकूलो ।
करतब फवळाई नीं राखी,
नीं आज जूझतां राखूंलो ॥

मुरळी निसरयोड़ो कळाकार,
जादू जिण रो मरणो धारचो ।
ललकारचो था म्हारै बळ नै,
जद दियो पळंगो बुचकारचो ॥

जदुना रै जोर मानखै नै,
अरजुन हळको मत जाण लियै ।
तूं अड़ण मरण री पकड इयां,
हूं मुडज्यास्यूं मत आस कियै ॥

रातै पर रीझण नै आयो,
कुंकू स्यूं कोनी धीजूंलो ।
थारा भुज थाक्या मानू, का,
खाडा री धार पतीजूं लो ॥

रगतां रा नाता घणो नेड़,
पूजा स्यूं आज नरै कोनी ।
मारग नीं छूटै नाता चैन,
म्हां नाता फिलन डरै कोनी ॥

जे तिरलोकी आडी आवै
तो तीन लोक स्यूं अड़ जान्यूं ।
रिसिया पर दूकै अभिमानी
वो पाप मिटया पाछो जान्यूं ॥

फाल्गुण रण रोप्यो, पारथ,
रण टळणो हाथ पाड्या रै,
जे राड वधाणी नीं चावै,
गधर्व हवालै कर म्हारै ॥"

गिरधर आ अदखी वात कही,
तातो सो अरजुन ताक रयो ।
बोलणनै होठ हिल्या जितरै
पड विचै सुभद्रा इया कयो ॥

"वीरा थे पकड अणूती नै,
इतरा तो अंवळा जावो मत ।
कर वात वावळा रै दाई,
ग्यानेसर गूंग खिडावो मत ॥

गंधर्व हवालै करणै रा,
क्यूं सुपना देखो सावरिया ।
कद कोई जवरै जुद्धा में,
जोरावर पाडू जेर किया ॥

बं, ये ही घड़ी–घडी धिरिया,
जद जरासंघ रो जोर अड्यो ।
आवो जग थानै जाणै है,
क्यू' मलो नांव रणछोड पड्यो ।।

लूंठां स्यूं अडतां वीराजी-
पण दूख्या है आगै–आगै ।
ज्यू रथ रो पहियो ले वधिया,
भारत भिड़ता भीसम सागै ।।

भोळप में भूल किती छोटी,
जुलम्यां ज्यू' हाय उठै थांरा ।
वीरा कूंकर इतरा हलका,
मानो ये मायां मिनखां रा ।।

अंवळी भाली है आख मींच,
गायक रो मरण धरम थांरै ।
उण सरणो लियो पाडुवां रो,
जद अभिमन्यू सिरसो म्हारै ।।

अब गळण–ढळण री बात किसी,
रण सिरसो ही रण नै मान्यां ।
जडुवां रै जोर मानखै स्यूं,
पांडू रो हळको मत जाण्यां ।।

रण रुपग्यो, भिझक रती कोनी,
नीं करम खेत कंवळाई है ।
इण करतव रै हेलै आगै,
कुण बैंन हुवै, कुण भाई है ।।

नैडो नातो [illegible]
मत [illegible] मन मे [illegible] ।
है सोगन [illegible] [illegible],
मत आज [illegible] ॥

हरि पुन्न-पाप रो [illegible] नातो,
थे हित्यारा ज्यूं आया हो ।
हथनापुर रो सत छळण री,
भूंडी ओळप भरमाया हो ॥

जदुवळ रो घणो भरोसो फर,
दादा-भाई मत अरगीजो ।
म्हे रगता स्यूं धीजा देस्यां,
जे कुंकूं स्यूं कोनी धीजो ॥"

अै तीखा वोल सुभद्रा रा,
ज्यूं तातो वळतो वायरियो ।
गिरधर रा नैण गुलावी हा,
झुळसै मन, उथलो उलट दियो ।

" तूं कियां सुभद्रा आज इस्या,
सवदां रा सेल चुभावै है ।
थारी आ जीभ कियां खुलगी,
सुणतां ही इचरज आवै है ॥

जिण घर मे जलमी बडी हुई,
घण कोडां स्यूं पाळीजी है ।
जीवण री जड़ां जठै थारी,
उण ही कुळ पर तूं खीजी है ॥

जदुवां री बैटी, जोर मर्दी,
पीवर पर इसो किया कोप ।
तूं सीरी बग सागरिये गी-
बध-बध बोलै, नीका लोप ॥

हूं आज जाणतो आपणला-
उट पळट पराया किया वर्ण ।
उपकार भूलग्या ज्यूं पाडू,
पण घोखो है तूं ही उफर्ग ॥

रणवास छोड रण मे आई-
फस वस्तर वानो रथिया रो ।
तूं ऊभी ओलो वण आगे-
हथनापुर रै अधिपतियां रो ॥

भरतार भोड ले खड़ी इसो,
सा'काण नाखदी माई री ।
पण भोळी वैं'न जगत कैसी-
अरजुन री ओट लुगाई री ॥

आयो तो दुनिया देख लियो,
बाकी रै'ग्यो है सूरापो ।
भुज भिड़िया हीं जाणीजै लो,
धर रुखवाळा रो धणियापो ॥"

आ सुण पारथ रो उणियारो,
रंग रातो होग्यो, रीस भरी ।
जदुपत नै रोक बिचै, बोल्यो
"इतरा हळका मत बणो हरी ॥

धम ब्याओ, [illegible]
नुण ह्रिदै, [illegible] री [illegible]
क्यू [illegible] [illegible] कोनी [illegible]
मन्निया ह्री [illegible] [illegible] [illegible] ।

ओ लोक धरम, मो [illegible] [illegible],
नारी रो [illegible] [illegible] है ।
दै जलम जगो पोखर [illegible],
[illegible] मरणो जठै [illegible] है ॥

सूरा घर जलम जगो [illegible],
सूरा रै हो तागै रै'णो ।
सूरा री घरण्या नैं गिरधर,
रण मे आया काई मैं'णो ?

इन्याव न्याव रो जुद्ध जठै,
क्यू ओछी बात विचारो हो ।
अरजुन रो निनख जमारो क्यूं,
धिर्कारो दे ललकारो हो ॥

ये अकरम पाप जियां आया,
इण धरा धरम रो धणियापो ।
जदुपत जवरा चेतो राख्या,
पारथ रो मरयां मिटै आपो ॥

अणहूतो अडियो देव, दैत,
नर, नारायण धारां कोनी ।
म्हे पांडू वै हा, सो'हारां,
पण हिम्मत नैं हारा कोनी ॥

हेलो कर कहूं स्याम सुणलो,
थांरा संसोच मिटा देस्यूं ।
मोवन मनडै री मजबूती,
मनसोवा सगळा ढा देस्यू ॥

हरि मत चींत्या थे लूंठा हो,
अरजुन रो हाथ अटक ज्यासी ।
हूं आखै जदुगण एक घणो,
नी भार सुभद्रा तक आसी ॥

मत मन मे वैम रती राख्या,
मत देख वैंन नैं दुख पाया ।
रण आज कसर नी राखूलो,
थे पूरो बळ कर अजमाया ॥"

कैं' इतरो पारथ निवण करचो,
राणी रथ पाछो मोड दियो ।
पाडू सैना रै आगै ला,
जदुपत रै सामै खड़ो कियो ॥

जद पारथ फूंक्यो देवदत्त,
तो पांचजन्य परमेसर रो ।
वा गाज हुई, गज चिघाड़्या,
ह्य हिणक्या, तन धूज्यो धर रो ॥

भुज फड़क्या सबळं सूरां रा,
वीजळ सी वाढाळ्यां भळकी ।
लोही मे न्हावण लो' हंसियो,
अण गिणती घण अणियां पळकी ॥

[illegible]ना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] री [illegible] [illegible]
[illegible]'चाल्या [illegible] [illegible] ॥

तन [illegible] [illegible]या [illegible] [illegible],
[illegible]रवा[illegible] [illegible] फूटै [illegible] ।
जाया बीजळ ज्यूं बळ [illegible],
फट-[illegible] [illegible] गे [illegible] [illegible] ॥

[illegible]टका [illegible]टका मुरजाळा रा,
रगता मे भिळ बिचरै [illegible]ळा ।
काया री समता माया रा,
'ज्यूं' झटकां भड़ै खिडै जाळा ॥

कटिया भुज-[illegible], [illegible] पगल्या,
[illegible], माथा बिखरया 'रो [illegible]ळो ।
ज्यूं [illegible]त सिटयो रग रगत '[illegible],
[illegible]' मास, [illegible]म रै हो [illegible]ळो ।

[illegible] परे [illegible] 'पं[illegible] 'पटगो,
[illegible]मी लोही [illegible] [illegible]ज्योड़ी' ।
भिळगी है रग कसूंबळ [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

धवळां री धमळा [illegible] [illegible],
कण रळया गन्द री [illegible] वणी ।
ज्यूं घर री बळ नभ निजगा[illegible],
[illegible] [illegible]रण [illegible] [illegible] वणी ।

का जोधां मांड्यो मरणजिग,
भख भूखो काळ लुकावै है।
का आभै आडो ओलो वे,
भण धरतती रगता न्हावै है ॥

का मिनख मानखै पर रीझ्या,
धारा धो पग पूजीजै है ।
का रातो डुळियो हिंगळू सो,
अवनी री माग भरीजै है ॥

जम री जाड़ा पर नाच-नाच,
संकर सो ताडव सूर करै ।
पारथ सारथ अैंडा टकरचा,
ज्यूं भोम भिळचा हीं आज सरै ॥

अणकूंत्यो जोर भुजावां रो,
कड़कै हो काळ कवाणा मे ।
बीजळ सी भळकै घडी-घड़ी,
आभै टकरातै वाणा मे ॥

ज्वाला धधकाता अगन अस्त्र,
अवनी ढक ज्यावै अगारा ।
घन घटा ऊलड़ै मेघ बाण,
जळ झडै, पड़ै जाडी धारा ॥

का वेग अणूतो आधी रो,
आवै ज्यू विस्व उडावैलो ।
भव-भूत मिड़ै हा इया, जियां,
सो' जीव जगत मिटज्यावै लो ॥

नर–नारायण रो जुद्ध हुवै,
डर स्यूं तिरलोकी धूज रही ।
भुजबळ स्यूं इळा उळट देवै,
अैं'ड़ी सगत्यां अड जूझ रही ॥

घनस्याम पसीनै मे न्हाया,
कर जोर वध्या चावै आगै ।
पण आंगळ कोनी सिरकण दै,
नी पार पड़ै पारथ सागै ॥

गिरधर रो वार जको आवै,
अरजुन उळ्टो उळ्टावै हो ।
नर रो हद हाव वध्यो अैं'ड़ो,
ज्यूं हरि री हसी उडावै हो ॥

लड़तां नै घड़िया पै'र हुया,
जद सूरज सिखर ढळण लाग्यो ।
पाढू रो दळ हावी होग्यो,
जदुवां रो जोस गळण लाग्यो ॥

पग पाछा सिरकै सूरां रा,
ज्यूं छेकड़ रो छेड़ो आग्यो ।
जद कोपै हरि रो एक बाण,
सर्णातो अरजुन रै लाग्यो ॥

नर अपर बळी रो तन उलड़्यो,
बण लोथ जियां, मुरछा आगी ।
चट पळट सुभद्रा सिर साम्यो,
मुरभी सी सांस सरण लागी ॥

पिव , पडियां हिंवडो ढबै कियां,
राणी री छळकी आखड़ल्यां ।
आसूडां ओस ढळक चाली,
ज्यूं राती पंकज—पाखड़ल्या ।।

पारथ डिगग्यो, भारत डिगग्यो,
आधार डिग्यो पाडु गण रो ।
भिड़तै जोधा रा भुज थमग्या,
सरणाटै मे रोळो रण रो ।।

हरि हाथां ढायो हेतूलो,
हिंवड़ै मे भभको अगनी रो ।
ओ प्यारो पारथ मुरझ्यो है,
भरतार डिग्यो है भगनी रो ।।

चित उठिये ज्यूं दोड़्या गिरधर,
नैणा मे हिंवड़ो गळ घुळग्यो ।
ज्यूं घणै जतन स्यूं राल्योडो,
लोभी रो आज रतन रुळग्यो ।।

हरि आंता देख, सुभद्रा उठ,
गळगळी कयो "थम ज्याया ये ।
अै पाप पड़चोड़ा भुज भाई,
पाडू रै मती लगाया थे ।।

पारथ पडणै री पीड घणी,
था गजब करचो है गिरधारी ।
पण हथनापुर हारचो कोनी,
नीं थाकी सांस सुभद्रा री ।।

ओजूं तो आधो बाकी है,
आगीनै पग मत सिरकावो ॥
है धरमराज री आण स्याम,
थे म्हारी हद मे मत आवो ॥

जे दया-मया-करुणा जागी,
तो वा दुबळा रातर राखो ।
ओजूं तो पण ओखो पळसी,
अड़ियोडा आपो मत नाखो ॥

तिरवाळो आयो पांडू नै,
जद सोयो पाछो उठ ज्यासी ।
घण बळ आळा सिमरथ भाई,
जीतण मे जोर घणो आसी ॥

नीं हेत प्रीत री अै घड़ियां,
भूलो भेळप नै मुड़ज्यावो ।
जे इण उपरान्त आवणो है,
तो वींध सुभद्रा वध आवो ॥"

कै' इया हाथ गांडीव लियो,
गीली पलकां मे रीस रमी ।
ओ देख वै'न रो सगत रूप,
एकर जदुपत री नाड़ नमी ॥

बोल्या "तै वै'न घणो वींध्यो,
बोला रै बाणा आज मनै ।
हिवड़ै रा घाव नहीं दीखै,
जे म्हूं तनै, के म्हूं तनै ?

तू' अबै सुभद्रा वस करदै.
हू आज घणो हीं जैर पियो।
कै' मुड़या गळ-गळा सा गिरधर.
रथ पर बैठ्या सिर झुका लियो ।।

हूनी सी खड़ी सुभद्रा जद.
थाकी सी नाख्यो निसकारो ।
इतरै हो चेत जवर पाड़,
नर उठियो खोज्योड़ो खारो ।।

घण रै हाथां स्यूं धनुस लियो,
सिर केस खिंडचा अवधूत जिया ।
धर जाड़ जड़ाको, जास खीच,
घण कोप भाभडाभूत जिया ।।

घायल तन तातो रगत झरै,
उण हीं रंग रळतो उणियारो ।
विकराळ काळ सो कुंताळो,
खीरां सी जगती आख्या रो ।।

सबळै भुज मे खैनास सगत,
पासूपत भाळ भळे भाली ।
पळकै मे मुळक्यो महाकाळ,
अग जग धूज्यो, धरती हाली ।।

भूतळ रुखवाळा भूप आज,
ज्यूं मूळ मिटासी जीवण रो ।
सावरियै साम्यो ब्रह्मअस्त्र,
किल्याण कापग्यो कण-कण रो ।।

सळ पड्यो दसा रै सिना-.
भूं भूतनाथ री वळ पाई ।
उणमुणं हंद री तन काढ्यो,
सुर नर री सगत्या थर्राई ॥

समदा री छोळ-हबोळ न्हो.
थाक्यो सो थमग्यो वायरियो ।
जम ठोड़ ठं'रग्यो आभै में.
रवि रै रथ रो वधतो पहियो ॥

संभळ्यो सासा नै रोक सेन्,
दस दिग्गज सावधान जमग्या ।
ज्यूं आगत लख्यो, विसाई लै,
सगळाई भूत भिळण सभग्या ॥

जवरां रै कोप जगत पूग्यो
विध्वंस नास रै कंगारै ।
वै सगत्या चढी कवाणा पर,
चाल्याऊं राख उडै लारै ॥

जद हेलो एक अचाणचको,
"ठं'रो भुज रोको थमज्यावो" ।
सिर घूम्या पारथ सारथ रा,
कुण करचो हाथ नै अटकावो ॥

हड़बड़ियोड़ा हाको करता,
दो रिषी दौड़ता आवै हा ।
अै नजीक 'नारद' 'गालव',
रथ हाथ उठा रोकावै हा ॥

आ लड़्या विचाळै दोनूं ही,
तन घणै पसीनै में न्हाया ।
हंसा केसा रै हाथयोड़ै,
गालव गिरधर नै बतळाया ॥

गळगळै कंठ फूटी वाणी,
लड़खड़ती सी आखड़ती सी ।
"हूं नहीं विचारयो इतो नास,
नीं चींती हाणी हुवै इसी ॥

जदुपत अब जोर रै'ण-द्यो थे,
संघार करो मत सिसटी रो ।
मनड़ै रो काळो कोप मिट्यो,
अभिमान गळ्यो म्हारै जी रो ।

म्हारो दोमी गंधर्वराज,
हूं खमा करूं अपराधी नै ।
धवळां अब ध्वंस करो मत थे,
रोको वधियोड़ी व्याधी नै ॥

निरदोस जगत नै मत मेटो,
अपराधी है गालव थारो ।
रण में जूझै जोधावा रो,
दोसी हूं आखी दुनिया रो ॥

जग ताप विकार हरण वालो,
वो रिसी दंभ में इसो ब'यो ।
ओ नास अरे कितरो मोटो,
पिछतावै जोगो नहीं रयो ॥

कितरै जीवां रो पाप आज,
गालव रै सिर पर आयो है।
दुख हुयो जगत नै कितो बडो,
तू आप कितो दुख पायो है" ॥

कै'रिसी विळखग्यो बाळक ज्यूं,
रथ नीचै उतरया गिरधारी ।
कर निवंण कयो,"धर धणियास्यूं,
घण बडो प्रतिरठा थ्यान्या री ॥

थे पुन्न रूप हो पूजनीक,
महमा है महर अटूट करो।
थ्या करुणा आज जकी फूटी,
हिवड़ै में रिसी अखूट करो ॥

नर दुरबळ बंध्यो विकारां में,
आखडतै रा आधार बणो ।
जग पाप-ताप स्यूं तपतै नै,
थ्यानी थे सीतळ धार बणो" ॥

कै' हरि चाल्या पांडू कानी,
रथ पर ही बैठ्यो रुस्योड़ो ।
बोल्या-"जदुपत री अगवानी,
अरजुन सामै तो आ थोड़ो ॥

आखी ही ऊमर जुद्ध किया,
जद आज थक्यो घे'डो काई ।
आगत रो स्वागत नहीं करै,
उण-मुणो हूयो पूंगै दांई ॥

हूं म्हारै सत, तूं थारै पर,
अउ लड़्या मानखै रै खातर ।
हूं आप घणो हीं पीडीज्यो,
तूं इतो अणेसो तो मत कर ।।

कुण जाणै कितरो जीव दुग्यो,
जद तैं पर हाथ उठ्यो खारो ।
पण आखडतै रो मितर पर,
अधिकार इतो तो हो म्हारो" ।।

कै' रुस्योड़ै नेही सामै,
नारायण आप निवण करियो ।
अणहद पोरस नद ढळ जिया,
पांडू रथ नीचै ऊतरियो ।।

मुरझ्यो सो लुल्यो पगां कानी,
सांवरिये बाथां भर लीनो ।
भिळतां दोनू विम्भळ होग्या,
भुज घेरो काठो कर लीनो ।।

गीलै कंठा बोल्या गिरधर,
"तैं आज घणो उपकार कियो ।
पारथ तूं आज घणो प्यारो,
मितर रे किसन उवार लियो ।।

जे भार उठा सत रो सिर पर,
तूं पांडू आज नहीं आतो ।
तो गळता मंतर गीता रा,
सो ग्यान अकारथ ही जातो ।।

हूं जाणूं, मोटो दाव लगा,
तूं आज घणो दुख पायो है ।
पण मोटो जस तैं हीं जीत्यो,
मिनखां में मिनख जगायो है ।

तूं बणी प्रेरणा पारथ री,
तूं हीं गिमरथ सगती नर री ।
तूं आज ठोड खड़ सारथ री,
गीता ही वणगी गिरधर री ।।

छोटी तूं पणी बडी होगी,
पत पाळण हेमांचळ बणगी ।
वो देख्यो थारो रूप आज,
भगती सी अचळ अटळ बणगी ।।

दोनूं हीं कुळ उजळाया तैं,
हद कर हिवड़ो हुळसै म्हारो ।
आ भाई री आसीस बैं'न,
सोहाग अखड सदा थारो" ।।

कैं' कंवळो भुज सिर पर फेरचो,
हिवड़ै री कळी-कळी खुलगी ।
अलस री पीड़ सुभद्रा री,
घुळ नैण अणेसो ले ढुळगी ।।

रूंधै कंठा स्यूं इतो कयो,
"हूं आज लाघदी मरजादा ।
जदुपत नै छोटा बोल कया,
छोटी हूं खमा करचा दादा" ।।

कै, ह्यां, सुभद्रा पीघळगी,
हरि ओजूं सिर पर हाथ धर्‌यो ।
पण निजर घूमगी, नारद रो
जद नेंऊं निसकारो निसर्‌यो ॥

सुत बूमां रो मोटो ग्यानी.
आसदतीहीण उदास जको ।
नर, देव, दैत नैं एक जिसो,
सगळा रो सम विसवास जको ॥

जिण नैं पाताळ, सुरग, धरती,
माया रो लेप नहीं लागै ।
संकर कैलासपती छळलै,
वो काम थकै जिण रै आगै ॥

पापा नै ढावण नित जागै,
जुगती स्यूं मारग कर देवै ।
ओ अथक रिसी कल्याण रूप,
थाक्योड़ी सास कियां लेवै ?

हरि निजर टेकदी नारद पर
जिग्यासा जागी नैणा मे ।
जद देव रिसी तेजस्वी री,
वाणी फूटी धा वैणा में ॥

"जदुनाथ सुभद्रा पारथ तो,
नें' नीरा स्यूं मन ज्यावैला ।
पण जका रेत में रळ्या मिनख,
बै कियां मनाया जावैला ?

रस्या, वढ विखरया कोसां में,
वाता रो लेस नहीं लागै ।
भख भूखे गिरज गादडा रो
इतरो ही सेस पड्यो आगै ॥

का जका काळजा श्रै टूट्या,
वांरा निसकारा वचग्या है ।
सिळगे हिवड़ा रा श्राप वच्या
का आंनू खारा वचग्या है ॥

काटया मिनखा नै मिनख अठै
नर वणग्यो नर रो हित्यारो ।
स्यूं रगत मास रो लोथा गो,
मुडदा रो लोक वस्यो न्यारो ॥

नर रै हाथा नर वळी इया,
नारायण कद तक होवैली ?
कद ताई धरती सिसक-सिसक,
धन इया श्रमोलख खोदैली ?

जुद्धा स्यूं न्याव किता दिन श्रो,
हूं वूझूं हूं गिरधर थानै ?
सत साख कसौटी वण पसुवळ,
कद तक धूजासी दुनिया नै ?

श्रधिकार मानखै रो निरणै,
रण रोळा कद ताई होसी ।
आ काळख श्रो श्रज्ञान पाप,
कद मिनख लिलाडी स्यूं धोसी ॥

रण अंधकार रो नीलमणी,
छेकड रो छेरै कद आ ती ।
सत–असत न्याव अधिकारा री,
कद ग्यान कसौटी बण ज्या नी ।।

भुज थारा नरा सिमरथा रा
कद ताई रगत खिडावैला ?
विसवास प्रेम रो जाग जगत,
कद उळझ्योडी सुळझावैला ?

ये दोनू जग रा प्रतिनिधि हो,
दोना नै दुनिया पूजं है ।
ओ नास देखता, नारद री,
हरि आज आतमा धूजै है" ।।

इण तरिया कळप्या देवरिसी,
मुख करुणा चिंतन झळक र ो ।
जग दुख स्यूं दुखतै ग्यानी नै,
ग्यानेसर गिरधर इयां कयो ।।

"दुनिया मे स्वारथ दंभ–असत,
नित नाच रया रण रुकै किया ?
अकरम स्यूं जुग–जुग जूझ्यो है,
नर भुक्यो नही, नर झुकै कियां ?

मन मिनखां जको विकार बसै,
सत्ता मे अहं जको रै'वै ।
बळ बधियो दंभ अकरमा भिळ,
रण नै भाला देतो बै' वै ।।

ज्यूं निवतो जावै धरमराज,
दुरियोधन सिर चढतो जावै ।
जद छेकड छेटै देवरिसी,
काळो दिन कुरखेतर आवै ।।

रण थकां मानखै रो हेलो,
अधरम स्यूं धरम टकर ज्यावै ।
लूंठा लूंटी चावै धरती,
जुद्धा रो अंत कियां आवै ।।

अपजोरा भोम भिळावण नैं,
अणहूंत अड़ै रण ललकारै ।
घर धरम, मुलक रो माण, आण,
जद वीरां नैं हेलो मारै ।।

नर रो सिमरय नर चींयीजै,
सांसां रो भार हुवै ओखो ।
जद ग्यानी नारद, कायर ज्यूं
जीणै स्यूं जूझ-मरण चोखो ।।

इन्याव-असत हद नैं लोपै,
अकरम-अधरम वधतो आवै ।
पत-पाळण मिनख-मानखै री,
जद छात्रधरम रण रोपावै ।।

रण माड़ो करम जगत जाणै,
पण हद रै नाकै झालीजै ।
डांगर नी धिरै दकाळचा जद,
लाठयां हीं खेत रुखाळीजै ।।

ओ मोटो भार माणसां नै,
पण अंत-पंत रो छेडो है ।
जद बोझ धरा स्यूं झलै नहीं,
इण स्यूं हीं हुवै निवेड़ो है ॥

रण नै अधरम मत को' नारद,
अधरम बधियै री औसद है ।
सगती पूजा रो संख-नाद,
ओ करम अकरमा री हद है ।

रण जद-जद लोक धरम कारण,
तो परम पुन्न परमारथ है ।
मरजाद मानखो राखण नै,
नर पूरां रो पुरसारथ है ॥

त्यागी, वैरागी परमहंस,
ब्रमग्यानी इण स्यूं न्यारा है ।
नीं लोक धरम निभणी आवै-
मरियोडा मरम जका रा है ।

का लाज-हीण मुडदा कायर,
कूडा भव तिसणा मरियोड़ा ।
जीवण रै लालच जिव्या रवै,
मरणै रै डर स्यूं मरियोडा ॥

उग देतो धायो जुगां-जुगां,
दारै धिर्कार जमारै पर ।
नीं मुलक मानखै मरण जोग,
लख लान्त उण उणियारै पर ॥

रण झालै वै भोमी मोगी,
रातया पर तीखा सेल सवै ।
धर धणी सत नी निभै कदै,
नी तंत-वायरा लोग रवै ॥

जे साति विचारक ग्यान्या नै,
इर परसराम सवळो देवै ।
तो ही आ घड़ी-घड़ी घिर-घिर,
जोधां नै पाछा वर लेवै ॥

सिर राख्या सदा हथेळयां पर,
रा सवळा भोमी मोगी है ।
रगती री भगती करै जकी,
दुनियां नी दुबळां जोगी है ॥

धरती जोधां री, जुद्धां री,
नी संता आळो वाड़ो है ।
आ खेती खसै जकारी हैं,
मल्लां रो बडो अखाड़ो है ॥

जुद्धा, जोधा, रै गीतां स्यूं,
इतिहास बण्या है जाता रा ।
धर धीजी रगता माथा स्यूं,
नीं मुलक बस्या है बाता रा ॥

सूरापै हींणा रा सासण,
मिटता जावै रण रोळा में ।
ज्यूं तोफानी झट झलै नहीं,
वै ज्याज समंद री छोळा मे ॥

रण धक्को कायर, कंवळां, री,
दुबळा री दुनिया उळटावै ।
ओ काटो हाथी तोलण रो,
कुतिया काणा मे तुल ज्यावै ॥

रण कदै क्राति रो रूप बणै,
रण कदै अणूतो हाण करै ।
पण घिर-घिर घेरा दै, नारद,
दुबळा सबळा री छाण करै ॥

सत, रज–तामस, गुण भावां रो,
रण हुवै मिनख रै अंतस में ।
इण तरिया अधरम-धरम अड़ै,
नित धरण धिकै रण रै वस में ॥

ज्यूं मथ हिये नै भाव सदा,
जुद्धा स्यूं धरा मथीजैली ।
आतम तो अजर अमर नित है,
नी छीजी है नी छीजैली ॥

ले मरण जीण रो हरख सोक,
सत छोडै कायर इग्यानी ।
नारद पथ भूल्या जिसी बात,
थे कियां करो मोटा ग्यानी" ॥

कै' मोवन मुळक्या मौन हुया,
जद उथलो दीनो देवरिसी ।
बोल्या "जे रण अंटो सत है,
तो साति भावना भरम जिसी ॥

मरजाद – मानखो – मंगा – धरम,
जे जगत भरोमें रण वळ रें ।
मोवन जे मगळ मिनखा रो,
टिकियो आधार अमगळ रें ।।

अकरम जुद्धा रें जोर ढवें,
जे ग्यान प्रेम उपचार नहीं ।
तो इण धरती रो अब गिरवर,
अपकार हुवें उपकार नहीं ।।

पासूपत परळें करण काळ,
नर रें हाथा मे महानास ।
जग जीवण रो विसवास डिगें
किल्याण होण री किसी आस ।।

पल में रीजें, रुसें, खीजें,
पल–पल में भाव पळट ज्यावें ।
मन कितो मिनख रो अपजोरो,
रिसियां रो आपो उफणावें ।।

जिण रो हिंवडो ही वस कोनी,
उणरें काबू मे महाकाळ ।
जदुपत थे आप बिचार करो,
ओ जोर ढळेंलो किसी ढाळ ।।

कुण जाणें मिनख अणूतो वण,
कद आपो भूलें कोप करें ।
जाणें कद जगत मिटा देवें,
धक्कें स्यूं धरती लोप करें ।।

बळ सीवा लांघ वध्यो आगै,
सिसटी रो मोटो श्राप वण्यो ।
रण लीक लोप सघार हुयो,
ग्रव अधम पाप सताप वण्यो ॥

ओ बृम-अस्त्र ओ पासूपत,
ओ हेलो होड लगावण रो ।
नी मगळकारी गिरधारी,
ग्राधो बळ भोम भिळावण रो ॥

जुद्धां पर धरा टिक्योड़ी है,
हरि अवै मानता आ मान्यां ।
नर री मुट्ठी खैनास खड़्यो,
नेड़ै ही ग्रंत हुयो जाण्यां ॥

भिळसी सत,असत, करम, अकरम,
इन्याव, न्याव, अणहूंत, हूंत ।
भटकै नै आखो जगत मिटै,
जद पाप पुन्न री किसी कूंत ॥

रण करै जका नी करै जका,
दुबळा, बूढा, बाळक, नारी ।
दोसी अणदोस दया जोगा,
मिटसी दुनियां पसु पंख्यारी ॥

हूं मानू भोम बटयोडी है,
न्यारी सत्तादां मत न्यारा ।
जन-गण न्यारा, जातां न्यारी,
अधिकार मरूधां रा सत न्यारा ॥

पग न्या॰ पणै रै नैचै स्यूं,
जे अब नर ऊचो नी आसी ।
तो स डाळा सागै ढंसी,
जग-रूंख मूळ स्यूं मिट ज्यासी ॥

आ तमोगुणी सगती पूजा,
मारग हिरणांकुस-रावण रो ।
आं छोळां, समद हवोळां रो
झोलो जग ज्याज डुवावण रो ॥

सिमरथ हरि थे ग्यानेसर हो,
ग्यानी नैं ग्यान किसो देणो ।
किल्याण विचारो दुनियां रो,
म्हारो तो इतरो ही कं'णो ॥

औ तन जोरावर मिनखां रा,
बोटचां में वढियोड़ा सोवै ।
कागा कावळियां गीरज गीध,
चोगड़दै गादड़ीया रोवै ॥

मनड़ो मिछळावै घडी-घड़ी,
नी ठोड़ ठै'रणै जैड़ी है ।
रवि आथूगै नाकै पूग्यो,
संध्या री बेळा नैड़ी है ॥

सैना नैं मोडो मुडो अबै,
पण विनय बिचारण री थास्यूं ।
गढ धरमराज रै हथनापुर,
हूं देव द्वारका धिर आस्यूं ॥

ओ जग थाक्योडो जुद्धा स्यूं,
अब पाप लारला धोणा है ।
उळझ्या आटा सूळझावण रा,
दूजा ही मारग जोणा है" ॥

फैं' नारद हरि पर निजर टिका,
बोला रैं'ग्या, वाणी थमगी ।
पारथ री दीठ, सुभद्रा री,
गालव री गिरधर पर जमगी ॥

नैड़ै आये रथ रै सारै,
ऊभै, जदुनायक री वाणी ।
चितण री लीक लीलाड़ी पर,
आंखड़ल्यां रो पळकै पाणी ॥

"संघार अस्त्र रो भै' भारी,
पण भै' तो भाव नहीं बदलै ।
बळ धधको बळ स्यूं झालीजै,
ओ जगत सभाव नहीं बदलै ॥

सुख सांती भली, निरमाण बडो,
इतरो तो आखो जग जाणै ।
पण रण बळ आडी हदबंदी,
जोरावर जबरा कद मानै ॥

बळ सस्त्र सगत-पर मुलकां रो,
आतम विस्वास टिकै नारद ।
नी सांती निभै समझोता स्यूं,
सगती समतोल धिकै नारद ॥

वळ बिना बावळी बुद्धी है,
वळ कोपं तो छेड़ो रण है ।
रण कुण चावै, पण हो ज्यावै,
करमां स्यूं मोटा कारण है ॥

रण, ग्यान, प्रेम रै थाकेलं,
उपज्यो उपचार अजै कोनी ।
हद अवसी ओड़ी उळझी रो,
दूजो आधार अजै कोनी ॥

पण तो ही भलो विचारण रो,
धर धरम वडो मिनखां रो है ।
जो चावै जद आया नारद,
ओ किसन सदा ही थांरो है ॥

रळमिळियां बैठ विचार किया,
कोई सुळझेड़ो सार हुवै ।
तो हूं हाजर हूं देव रिसी,
सिसटी रो ने उपकार हुवै" ॥

कै जदुपत रिसियां नै निंवियां,
सिर झुक्या सुभद्रा पारथ रा ।
आसीस देवता मुड़ग्या मुनि,
घोड़ा हिणक्या हरि रै रथ रा ॥

भुज फेरयो सीस सुभद्रा रै,
पग पायदान पर स्याम धरचो ।
रथ पर चढतां नारायण नै,
नर पारथ ओजूं निवंण करचो ॥

गोपाळ कयो सुण कुंताळा,
नारद री बात विचार करै ।
पण जको रास्ट्र रो रुखवाळो,
उण छात्र धरम नै मत विसरे ॥

तूं आज जियां हीं नित सत पर,
दिढ नैंचो कर मजबूत रहे ।
कंवळो दण भूल भावना में,
मत कदे भणूतो पाप सहे ॥

अरजुन बोल्यो आं जुद्धां स्यूं,
जी दोरो घणो अणमणो है ।
पण हूं तो आही झाल खड़्यो,
सैनिक हूं धरम जूझणो है ॥

मन दाझ्यो, दाझ वणी मन री,
रगतां में न्हायो किती वार ।
जीणै मरणै रो भरम गयो,
अब नी विचार, नी जीत हार ॥

चित समंद हयोळ झबोळ उठी,
कितरी छोळा छळकी निसरी ।
हू जीत्यो जद कितरो रीत्यो,
कद पीट गुणी नर पारथ री ॥

संपीड़्यो, यक-यक अयक हुयो,
जीवण जुद्धां मे रम गसग्यो ।
हूं पारै बोला थिर थमग्यो,
गिरधारी होय जरू जमग्यो ॥

अब आछी माड़ी चिंतण रो,
ये थारै ही सिर भार धरो ।
सैनिक तो सीस झुका मानै,
ग्यानी हो जका विचार करो ।

ज्यूं हुकम करो थे, धरमराज-
दिढ नैचै दाव लगा देस्यूं ।
जिण दिन कै'देस्यो सांवरिया,
पासूपत तोड बगा देस्यूं ।।

थे देव बताओ जकी दिसा,
अरजुन चालैलो उण पथ पर ।
कै' इतो सुभद्रा रै सागै,
पांडू मुड़ग्यो चढग्यो रथ पर ।।

इण पीड भरै सिमरथ नर में,
अधा भगती रो वास कितो ।
दिढ नैचो, नेवं, निवण कितरो,
अणडिग निरभै बिसवास कितो ।।

रथ सिरक्या, बीच बधण लाग्यो,
हरि मुड–मुड़ ला'वो लै हा ।
पलका गोली अपलक दीठी,
जाती जोड़ी नै निरखै हा ।।

दो दळ अडिया, मुडिया पाछा,
धसळां रा धरा निसाण रया ।
नरमुंड, हाड का रगत मांस,
मुड़दां रा सेस मसाण रया ।।

इण तरियां जुग-जुग जग खोज्यो,
जुद्धां स्यूं त्राण मिल्यो कोनी ।
धरती रै मिनख मानखै नै,
ग्रोजू ओसाण मिल्यो कोनी ॥

—: समाप्त :—

भूल सुधार

पानो	छद	ओळी	भूल	सही
क	.	१७	जसम्या	जलम्या
क		२८	वैद्यव्य	वैधव्य
८	६	२	रूखाला	रुखाळा
९	१	३	बुर्भे	बूर्भे
११	३	३	महिपा	महीपा
१२	६	१	तवया	तक्या
१६	२	२	जूर्भैलै	जूभलै
१७	६	४	सीनव	मीतळ
२०	५	१	मार	भार
२५	४	२	झळके	झळक
३२	४	१	रुपज्यार्मी	रुपज्यामी
३६	४	४	धरम	मरम
५०	६	३	लिको	नियो
७३	४	४	मेळो	भेळो
७८	१	४	धरनती	धरती